RAJBIL26868/2016/1284525

वर्ष 2 अंक 7 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

हिन्दी मासिक पत्रिका

मार्च 2019

पेज संख्या : 36 राजसमंद

शहीद नारायण की अंतिम विदाई में उमड़ा मेवाड़

शहीदों की जननी है मेवाड़

एक शारीरिक शिक्षक ने बदल दी लवाणा विद्यालय की तस्वीर

जिला चिकित्सालय स्वस्थ, मगर व्यवस्थाएं है बीमार

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

रंगों का पर्व होली की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

हरिओमसिंह राठौड़
सांसद-राजसमंद

अनुराधा वैष्णव
सरपंच

रामदास वैष्णव
उपसरपंच

करणसिंह राव
ग्राम विकास अधिकारी

हिरालाल पूर्बिया
सहायक सचिव

हेमलता श्रीमाली
प्रेरक

वार्डपंच :- दुर्गा कुंवर, वेणीराम भील, शिवनारायण पालीवाल, बसंत कुमार पालीवाल, ललितादेवी सेन, गणेशलाल सालवी, गीतादेवी भील, हेमलता देवी पालीवाल एवं समस्त ग्रामवासी

ग्रामीणों से अपील

◆ ग्राम पंचायत के समस्त निवासियों से अपील की जाती हैं कि अपने-अपने घरों में जलबद्ध शौचालयों का निर्माण करवाएं और उसका नियमित उपयोग करें। ◆ ग्राम पंचायत को खुले से शौच मुक्त (ओडीएफ) बनाए रखने एवं ग्राम पंचायत को साफ-सुथरा व निर्मल बनाने में सहयोग प्रदान करें। ◆ प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ लेने हेतु अधिक जानकारी ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त करें। ◆ प्रधानमंत्री उज्ज्वला स्कीम योजना के तहत बीपीएल परिवार निःशुल्क रसोई गैस कनेक्शन की सुविधा प्राप्त करें। ◆ मनरेगा श्रमिकों एवं अन्य मजदूरों के लैबर कार्ड ज्यादा से ज्यादा बनवाने में सहयोग करें। राज्य सरकार द्वारा इस योजना में पंजीकृत परिवार को बीपीएल परिवारों से भी अधिक लाभ दिया जाएगा। ◆ पर्यावरण संरक्षण के लिए ज्यादा से ज्यादा पौधे लगाएं। ◆ अपना काम अपना खेत योजना का अधिक से अधिक लाभ उठाएं। ◆ कचरे को कचरा पेटी में ही डालें।

ग्राम पंचायत तासोल, पंचायत समिति राजसमंद

सम्पादकीय

यादों की बारात

यहां न ही सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में त्यौहारों के महत्व पर कोई गहन गंभीर विचार विमर्श करने का मंतव्य है और न ही बनते बिगड़ते सामाजिक समीकरणों में पर्वों की मिठास पर सिर खपाने का मूड है। न ही किसी सामाजिक क्रान्ति का शंखनाद करने की इच्छा है और न ही उन रंगों से होने वाली हानियों का वैज्ञानिक विश्लेषण करने का सुख है, जो रंगों के त्यौहार पर मुझे भयभीत कर उत्साह का ही रंग भंग कर देती हो। रंगों के पर्व होली पर मैं उन दो महान चरित्रों पर प्रकाश डाल अपने भाव सुमन अर्पित करने को समुत्सुक हूं, जो आज भी मेरी स्मृतियों के आकाश में निवीड़ अंधकार के बीच किसी सौदामिनी की तरह चमक चमक कर मुझे अपनी और बरबस खींचते हैं। मेरी यादों की बारात में बस ये दो ही बाराती शामिल होते हैं। हर होली के पर्व के उमंग भरे माहौल के बीच। एक मेरी स्कूल लाइफ की यूनिफॉर्म मेरी कमीज और दूसरा गोबर को अपने कोमल हाथों से थाप थापकर गोलाकार बरूला, बड़गूला या वह जो भी जिसका मानक नामकरण मैं आज तक नहीं कर पाया हूं, लेकिन होली के महापर्व पर मेरी खुशियों के लिए इनका हंसते हुए बलिवेदि पर चढ़ जाना आज भी मुझे याद है। पिताजी की वह धोती जो धुल धुल कर इतनी मटमेली हो गयी होती कि उन जैसे लब्ध प्रतिष्ठ के सम्मान को और अधिक ठेस होते न देख पाने के कारण मेरे स्कूल के यूनिफॉर्म की कमीज के रूप में तब्दील कर दी जाती। मां की इस खुशामदी अंदाज में की गयी विनती को आज भी याद करता हूं, तो अभावों के दंश में जूझते मध्यवर्गीय परिवार की मनोदशा पर दो बूंद आंसू और बेफिक्र हंसी की फुलझड़ियां छोड़ने के साथ परम संतोष से भर उठता हूं, तब जब वे कहती थी। इस बार होली के बाद नई कमीज सिलवा दूंगी। तब तक इसे पहन लेना। और फिर बसंत पंचमी का पर्व आता। स्कूल की पिकनिक। बच्चों को पीली कमीज पहनकर आने की सख्त हिदायत। नयी कमीज सिलने का जोग संजोग बनने के दिन होते थे वे। बाजार से ला सस्ता बसंती रंग नांद में डुबोकर पिताजी की अब तक और मटियायी हो चुकी झर झर झिर झिर कृशकाय कमीज को बाहर निकाल कर एक बारगी झटक जब तार पर लटकाया जाता तो लगता, वह कमीज नहीं, वसंती चोले में शहादत को प्राप्त कोई सैनानी हो। मेरे सुख के खातिर बलिवेदि पर चढ़ी यह पीली कमीज अब वसंत पंचमी से लेकर धुरंडी की दोपहरी तक मेरे तन पर सजी कई सारे भाव रंगों से मुझे सराबोर किये होती। कल यह कमीज़ घर आंगन को बुहारने, संवारने वाला पौंछा बन जायेगी। लेकिन किसी उपेक्षित कोने में अपनी मुक्ति की प्रतीक्षा में मेरे तन पर सजी उजली यूनिफार्म देखकर वह कितनी खुश होती होगी। मुझे आज तक मालूम नहीं हो पाया। होली के उल्लास भरे माहौल में क्षत विक्षत, लेकिन मेरी खुशी में खुशियां मनाती उस कमीज को मैं अब भी खोजता फिर रहा हूं।

एक और याद जो मुझे हुलसाती है, रुलाती है। होलिका पूजन के लिये अपनी मां, बहिनों और छोटे भाई के साथ अल सुबह होली थड़ा जाते समय बरूले, बड़गूले या आप जो भी कहें की माला को अपनी कलाइयों में सजाये, उलझाये। नहीं मालूम, पूजन की थाली, जल की लोटी, होली की आंच में तपाने के लिये ले जाये जाने वाले धान में से गोबर के उन छोटे छोटे सूतली में पिरोये बरूलों के जयमाल को ही लेकर चलने का आग्रह क्यों होता था ? शायद स्टाइलिश होना या एटीट्यूड दिखाना ? जो भी हो, लेकिन होली के डंडे के ऊपरी सिरे की ओर तक कर माला को एक विशेष अंदाज से सनसनाते हुए फैंकने का आनंद अनिर्वचनीय होता था। शायद होली डंडा रोपण के तत्काल बाद गाय के ताजे गोबर की आस लिये दर दर, सड़क, गली भटक कर उसे इकट्ठा कर थापना, आकार देना और समस्त कला कौशल के निवेश के बाद तैयार माला का यह हश्र होना कितना सुखकारी होता था, बयान नहीं किया जा सकता। इन मालाओं द्वारा होलिका दहन के दैवी और शास्त्रीय विधानों को तो बड़े होकर जाना। बचपन तो त्यौहार, पर्वों की प्रतीक्षा ही खुशी के इजहार के लिये करता है। इन पंक्तियों के लेखक के लिए वसंती कमीज और बरूला, बड़गूला अथवा आप जो भी कहें, भारतीय पर्वों के वे सामाजिक व लोक रंग हैं, जो संवेदनों व संस्कारों की एक प्रकार से कार्यशालाएं हैं। इन्हीं से गुजरकर कोई ऑफट्रेक मोहक यादें हों तो आप भी कहें।

अतिथि सम्पादक

डॉ. राकेश तैलंग,

वरिष्ठ साहित्यकार, द्वारकेश मार्ग कांकरोली

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

website : liverajsamand.com

सम्पादक व प्रकाशक	ललिता राठौड़
निदेशक व उप सम्पादक	विजय शर्मा
सह सम्पादक	हितेन्द्रसिंह चौहान
सम्पादन सहयोगी	सूर्यप्रकाश दीक्षित, हेमेन्द्रसिंह
विज्ञापन प्रबंधक	जितेन्द्र शर्मा
संवाददाता	नरपतसिंह राठौड़
ग्राफिक डिजाइन	महेन्द्रसिंह मोजावत
फोटोग्राफी	भरत पालीवाल (श्रीराम स्टूडियो)
वितरण सहयोगी	नारायण पालीवाल, सुधीर दवे

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9950084705

Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

संपादक, प्रकाशक एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स हस्तिनापुर, कांकरोली, जिला राजसमंद राजस्थान से मुद्रित।

नोट : पुस्तक में प्रकाशित हर सामग्री में यथासंभव सावधानी रखी। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद। किसी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

इस अंक में खास...

1. **कवर स्टोरी :** शहीदों की जननी है मेवाड़ — पेज- 4
2. **ऑन द स्पॉट :** जिला चिकित्सालय स्वस्थ, मगर व्यवस्थाएं बीमार — पेज- 7
3. **गुमनाम शख्सियत :** एक शिक्षक ने बदली विद्यालय की तस्वीर — पेज -9
4. **तीखी मिर्ची :** बढ़ते वेतन पर कम होती जवाबदेही — पेज- 11
5. **मंथन :** ... तो भारत पर आंख उठाने की नहीं हो हिम्मत — पेज - 12
6. **माटी का लाल :** स्वतंत्रता सेनानी देवेन्द्र कर्णावट — पेज - 15
7. **तासोल ग्राम यात्रा** — पेज - 17
8. **व्यंग्य :** बिच्छूवाद — पेज - 21
9. **हालात :** हम सब है झूठें और झांसेबाज — पेज - 22
10. **अध्यात्म :** भक्ति से पहले सरलता जरूरी — पेज - 24
11. **कविताएं :** बदले की आग में सुलगता मुल्क, सन्नाटा — पेज - 26
12. **मेरा गांव, मेरे लोग :** बंगाली मोलाना और छन्नुलालजी — पेज -29
13. **एक्जाम अलर्ट** — पेज -31

शहीदों की जननी है मेवाड़

देश के लिए न्यौछावर हो गए राजसमंद की माटी के रणबांकुरों की कहानी

बिनोल के शहीद नारायण

''इस कदर वाकिफ है मेरी कलम, मेरे जज्बातों से। अगर मैं इश्क लिखना भी चाहूं तो इंक़लाब लिखा जाता है'' भगतसिंह के इस कथन से तो आप वाकिफ ही होंगे। पहले आजादी के लिए लड़कर कई देशभक्त शहीद हो गए। आजादी के बाद भी दुश्मन देश व आतंकवादियों ने कई बार हमले किए, मगर ऐसे में देश के सच्चे सपूतों ने न सिर्फ़ पलट कर जवाब दिया, बल्कि उनका जीना दुश्वार भी कर दिया। इन युद्धों में हमने कई जवानों को खोया है, कुछ का नाम हमारे ज़ेहन में है, तो कुछ जवान अभी भी गुमनामी की ज़िंदगी जी रहे है। राजस्थान की धरती भारत की शक्ति स्थली रही है। देश के बाहर और भीतर की हर उथल पुथल में राजस्थान के मेवाड़ और मेवाड़ में राजसमंद (मगरा क्षेत्र) के जवानों ने सामना किया है। कारगिल सरीखे कई युद्ध हुए, जिसमें अनगिनत सूरमाओं की ऐसी परंपरा रही है, जिससे हर भारतवासी को गर्व और रोमांच का अनुभव होता है। जयवर्द्धन के इस अंक में हम ऐसे ही बहादुर, रणबांकुरों की कहानी लिख रहे हैं, जिसे पढ़कर आपका भी सीना गर्व से चौड़ा हो जाएगा।

शहीद नारायण गुर्जर की वींरागना को दो दिन पहले ही हो गया था अनहोनी का आभास

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

जम्मु कश्मीर के पुलवामा आतंकी हमले में 14 फरवरी को सीआरसीएफ जवान बिनोल निवासी नारायणलाल गुर्जर भी शहीद हो गया। घटना के तीसरे दिन उनकी पार्थिव देह सेना के विमान से कांकरोली के जेके हवाई पट्टी पर पहुंची, जहां से विशेष ट्रक में शहीद की पार्थिव को बिनोल गांव ले जाया गया। पार्थिव के अंतिम दर्शनों के लिए राजसमंद के साथ समूचा मेवाड़ और मारवाड़ से भी हजारों की तादाद में लोग उमड़ पड़े।

शहीद नारायणलाल की पार्थिव 16 फरवरी दोपहर ठीक ग्यारह बजे जेके हवाई पट्टी पर हेलीकॉप्टर से पहुंची, तो उससे पहले ही हजारों की तादाद में राजसमदं शहरवासी व दूर दराज से हजारों की तादाद में लोग एकत्रित हो गए। कलक्टर अरविंद पोसवाल, एसपी भुवन भूषण यादव के साथ कई पुलिस व प्रशासनिक अधिकारियों ने शहीद की पार्थिव देह को कंधा दिया। फिर पार्थिव को ट्रक में रखी और धीरे धीरे आगे निकले, तो रास्ते में हजारों की तादाद में लोगों ने नारायणलाल गुर्जर के जिंदाबाद के नारे लगाए और जगह जगह पुष्प वर्षा कर शहीद की पार्थिव का स्वागत किया। पार्थिव को जेके सर्कल क्रॉस कर राजसमंद शहर के सौ फीट रोड स्थित शहीद स्मारक पर ले जाया गया, मगर भीड़ काफी बढ़ने से कानून एवं शांति व्यवस्था के लिहाज से शहीद की पार्थिव को बजरंग चौराहा, राजनगर, कॉलेज, पुलिस लाइन होकर कर वापस आरके जिला अस्पताल, जेके सर्कल होते हुए मादड़ी चौराहा होकर बिनोल गांव पहुंचे। बिनोल में ताबूत में पार्थिव घर में ले गए, जहां उनकी पत्नी मोहनीदेवी व परिजन शहीद के अंतिम दर्शन भी नहीं कर पाई। बाद में गांव के श्मशान में राजकीय सम्मान से उनकी पार्थिव का अंतिम संस्कार कर दिया गया। इस दौरान नेता प्रतिपक्ष गुलाब चंद कटारिया, प्रभारी मंत्री उदयलाल आंजना, विधायक किरण माहेश्वरी के साथ हजारों की तादाद में लोग शामिल हुए। इधर, नारायण 11 फरवरी को ही घर से ड्यूटी पर गया था, तभी पहली बार उनकी पत्नी व बच्चे बिलख पड़े। तब नारायण ने पत्नी को हिम्मत दिलाते हुए कहा क्या मैं पहली बार जा रहा हूं। इस तरह क्यों कर रही हो। तभी वीरांगना मोहनीबाई को अहसास हो गया था कि कुछ अनहोनी होने वाली है।

प्रथम विश्वयुद्ध से अब तक राजसमंद का सैनिक योगदान व शहीदों का ज्ञात इतिहास

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

देशसेवा के लिहाज से उदयपुर संभाग में राजसमंद जिले का खास महत्व निर्विवाद है। जब देश में मुगलशासन था, तब मेवाड़ ही एकमात्र ऐसा इलाका था, जिसने मुगल की अधीनता स्वीकार नहीं की थी। इसको लेकर महाराणा प्रताप का स्वर्णिम इतिहास है। हल्दीघाटी और दिवेर के युद्ध स्मारक आज भी लोगों को आन, बान, शान की प्रेरणा दे रहे हैं। इसी तरह अजमेर (अजयमेरू) का इतिहास भी अनूठा रहा है। अजमेर- मेरवाड़ा क्षेत्र में सांभर चौहान वंश की अजमेर (मेर) व नाडोल शाखा (रावत) की जनसंख्या अधिक रही। अजमेर शाखा में पृथ्वीराज चौहान की मृत्यु के बाद धर्मांतरण होने से यह 'मेर' कहलाने लगे। यहां के लोगों में ब्रिटिश शासन के विरूद्ध बहुत असन्तोष व्याप्त था। आबादी की वीरता अपराधिक गतिविधियों व धर्मांतरण से बिखर गई। पृथ्वीराज चौहान की सेना के सैनिक मूल स्वरूप से बिखरे मेर व क्षत्रिय चौहानों को इस्लामिक आक्रांताओं ने एक मानकर सबको 'मेर' नाम से इतिहास लिखा। इस प्रकार यह क्षेत्र मेरवाड़ा कहलाया।

ब्रिटिश शासन और भारतीय सैनिक

अजमेर मेरवाड़ा प्रांत पर आधिपत्य स्थापित करने की नीति के तहत सन् 1823 ई. में ब्रिटिश हुकूमत के आदेश से 44 मेरवाड़ा राजपूत इन्फेंट्री बटालियन का गठन किया। 1 दिसम्बर 1926 के एक पत्र में मेजर जनरल कमांडिंग ऑफिसर सीवीएफ टाउनशेड ने लिखा था कि राजपूताना के मध्य भारत के सहायक भर्ती अधिकारी के रूप में मैंने पाया 1920 से 1921 ई. में पाया कि सारे भारत में सेना में भर्ती होने वालों में संख्या के लिहाज से मेरवाड़ा सबसे अव्वल था। मैंने व्यक्तिगत रूप से मेरवाड़ा राजपूताना की निडरता, बहादुरी व देश के प्रतिबद्धता देखी है। मगरे के प्रथम शहीद राजू रावत जातीय स्वाभिमान के लिए 12 वर्षों तक अंग्रेजों के छापामार युद्ध करते रहे थे।

प्रथम विश्वयुद्ध और मेरवाड़ा बटालियनों का गठन

प्रथम विश्वयुद्ध 1914 ई. के दौरान ब्रिटिश सीवीएफ टाउन शेड, मेज कमांडिंग ऑ. 6 वी. बटालियन फोर्स में कुतएल अमराह अधिकारी थे। ये 1842 से 1857 ई. तक सयुंक्त अजमेर- मेरवाड़ा के गवर्नर रहे। इनके अनुसार रावत राजपूतों ने निम्न बटालियनों में अपनी सेवाएं दी।

1. 29वीं पंजाबी कन्टेनिंग वन कम्पनी ऑफ रावत एण्ड मेरात्स।
2. 2वीं, 42वीं देवली रेजीमेंट कंटेनिंग वन क. ऑफ रावत एण्ड मेरात्स
3. 43वीं, 2वीं, 43वीं यूरोपियन रेजिमेंट
4. 44वीं मेरवाड़ा बटालियन
5. दी 72वीं पंजाबी कन्टेनिंग वन कं.
6. दी 122वीं राजपूताना इंफेंट्री
7. दी जे एण्ड के कम्पनी ऑफ दी 122 इंफेंट्री
8. दी 2/119वीं इंफेंट्री
9. दी 3/150वीं इंफेंट्री
10. दी कुली कॉपर्स कंटेनिंग वन कं.
11. दी ट्रांसपोर्ट कॉपर्स कंटेनिंग
12. दी हॉस्पिटल कॉपर्स कंटेनिंग वन कं.
13. दी आर्मी बिएर कॉर्प्स

उपरोक्त रेजीमेंट्स ने प्रथम विश्वयुद्ध में पूरी वीरता एवं बहादुरी से अपना प्रदर्शन किया। इसमें सैंकड़ों रावत राजपूतों ने अपनी जान की कुर्बानियां दी। प्रथम विश्वयुद्ध से लेकर आज तक कई मोर्चों पर अपने पराक्रम का परिचय दे चुके हैं।

प्रथम विश्वयुद्ध के शहीद और विक्ट्री मेमोरियल

साल 1914 से 1918 ई. तक चले प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान ब्रिटेन की तरफ से हजारों सैनिकों ने भाग लिया। कॉमनवेल्थ वॉर ग्रेव कमीशन के मुताबिक अविभाजित भारत से 11लाख सैनिकों ने इस युद्ध में भाग लिया था। इसमें से 10 लाख भारतीय सैनिकों ने विदेशों मे अपनी सेवाएं दी थी। युद्ध के दौरान कुल 62000 सैनिक भारतीय मारे गए। लगभग 67000 सैनिक घायल हुए। देशी- विदेशी सैनिकों को साथ जोड़ा गया तो 74,187 सैनिकों का नाम आया था। 1931 ई. में ब्रिटिश शासकों ने दिल्ली के राजपथ (किंग्सवे) पर 43 मीटर ऊंचा विशाल द्वार बनवाया। यहां प्रथम विश्वयुद्ध के शहीदों को श्रद्धांजलि दी जाती है, जिन्होंने लड़ते हुए अपने प्राण गवां दिए। 13000 सैनिकों के नाम इंडिया गेट पर उत्कीर्ण हैं। यह स्वतंत्र भारत का राष्ट्रीय स्मारक है। अजमेर- मेरवाड़ा व राजपूताना (राजस्थान) के 1550 शहीदों के नाम भी इसमें ही उत्कीर्ण हैं। यहां बाद में अमर जवान ज्योति स्थापित की गई थी, जो निरन्तर शहीदों की याद में जलती रहती है। अजमेर- मेरवाड़ा के शहीद सैनिकों के कुछ नाम जो इंडिया गेट पर उत्कीर्ण हैं-

1. अमीरा रावत 19087 पिता नन्दू रावत, अजमेर (आर्मी बिएर)
2. बद्धा रावत 555797 पिता कम्बार रावत, कालादेह भीम (आ.हॉ.कॉ.)
3. नंगा रावत 5206 पिता केना रावत, नसीराबाद (आर्मी हॉ.कॉ.)
4. हरनामसिंह 983 पिता रामसिंह, अजमेर (इंडियन लेबर कॉर्प्स)
5. गाजी रावत 1059 पिता जीवन, गुनपुराएब्यावर (150 इंडियन इंफेंट्री)
6. कूंपा रावत 681 पिता लाला, राजगढ़. अजमेर (150 इंडियन इंफेंट्री)

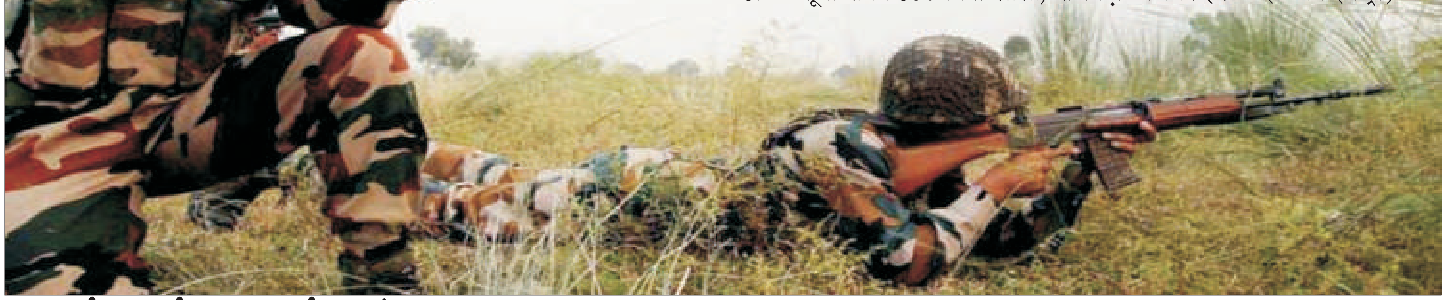

7. माला रावत 1064 पिता बीना, बुकाहोरिया ब्यावर (150 इंडियन इंफेंट्री)
8. रामा रावत 687 पिता गोमा, राजगढ़ अजमेर (150 इंडियन इंफेंट्री)
9. चूना रावत 636 पिता बजा रावत छापली (राजसमंद)
10. देवा रावत 2576 पिता पांचा रावत, बरजाल (राजसमंद)
11. मानसिंह रावत 1979 केसा रावत, बरार (राजसमंद)

सैनिक विश्राम गृह टॉडगढ़ अजमेर

क्षत्रिय रावत राजपूत जाति ने अपने बलिदान, शोर्य, पराक्रम से देशसेवा की कई मिशालें पेश की थी। कई बड़े सम्मान अर्जित किए। इसी वीरता की याद को अक्षुण बनाए रखने के लिए शहीदों की याद में अजमेर के टॉडगढ़ में बनाई गई थी विक्ट्री मेमोरियल धर्मशाला। रावत राजपूत योद्धाओं को इंडियन ऑर्डर ऑफ मेरिट और विक्टोरिया क्रॉस इंडियन ऑर्डर ऑफ मेरिट से सम्मानित किया गया था। प्रथम विश्वयुद्ध में टॉडगढ़ क्षेत्र के शहीद हुए 124 सैनिकों की याद में पेंशनर सैनिकों के आर्थिक सहयोग से निर्मित यह स्वाभिमान का प्रतीक आज जर्जर हालत में विद्यमान है। 15 दिसम्बर 1942 को एक भव्य समारोह में ऑनरेबल मिस्टर आई.आई. हॉलेंड, तत्कालीन गवर्नर जनरल व चीफ कमिश्नर ऑफ अजमेर मेरवाड़ा ने इसे समाज को अर्पित कर शुभारंभ किया।

बचपन से भरते हैं देशसेवा का जज्बा

मेवाड़ के राजसमंद व राजसमंद के मगरा क्षेत्र के युवाओं को देशप्रेम का जज्बा विरासत में मिलता है। यहां देश आजादी से पूर्व मगरा क्षेत्र कभी किसी शासन व्यवस्था का गुलाम नहीं रहा। देशी रियासतें हो या विदेशी ताकतें। स्वतंत्रता का संघर्ष निरंतर चलता रहा। शहीद राजू रावत भी इसी काल में हुए थे। तत्कालीन समय से लेकर अब तक क्षेत्र के युवाओं में देशप्रेम का जज्बा जीवित रखने में यहां के बुजुर्ग लोगों व पेंशनर सैनिकों ने कोई कसर नहीं छोड़ी। यही कारण है कि यहां के युवा देशप्रेम व सेवा के प्रति हमेशा समर्पित रहते हैं। पूरे सम्भाग में सैनिकों की सर्वाधिक संख्या इस क्षेत्र के लोगों की हैं। आजादी के पूर्व से ही भीम देवगढ़ क्षेत्र के हजारों सैनिकों ने देश के लिए योगदान दिया। भौगोलिक दृष्टि से पहाड़ी क्षेत्र होने से यहां के युवाओं का शारीरिक सौष्ठव, कदकाठी सर्वश्रेष्ठ होने से दौड़ में अव्वल रहने के कारण आसानी से सेना में भर्ती हो जाते हैं। इसके चलते कई परिवारों में परम्परागत रूप से सेना के प्रति रूझान बढ़ता गया। देशसेवा के इस जुनून के चलते कई परिवार सैनिक परिवार के रूप में पहचाने जाते हैं।

शहादत में बहुत आगे हैं मगरे के रणबांकुरे

देशसेवा के लिए मर मिटने वालों में उदयपुर संभाग से सबसे ज्यादा रणबांकुरे राजसमंद जिले से हैं। इसमें मगरा क्षेत्र (भीम- देवगढ़) की तादात अधिक हैं। 1965 की लड़ाई हो या 1971 का युद्ध, ऑपरेशन ब्ल्यु स्टार हो या ऑपरेशन पवन या कारगिल हमला। हर लड़ाई में यहां के सैनिकों ने साहस व बलिदान का परिचय दिया। 1965 से 2019 तक राजसमंद जिले से कुल 16 जवानों की देशसेवा में शहादत हुई हैं। इसमें से 12 सैनिक मगरा क्षेत्र के थे। दो सपूत नाथद्वारा, एक कुम्भलगढ़ व एक राजसमंद के बिनोल गांव का है।

संभागीय वीर शहीदों की सूची

1. कालूसिंह, सिपाही गोहाना ब्यावर (अजमेर) 1965
2. सगतसिंह, सिपाही, कुंठवा नाथद्वारा 1965
3. अजबसिंह, सिपाही पावटिया (भीम) 1965
4. गमेरसिंह ड्राइवर खुमाणपुरा नाथद्वारा 1965
5. रामलाल एफएन पाटियां (भीम)
6. भगवानसिंह रा. मैन बार (भीम)
7. त्रिलोकसिंह रा. मैन कूकड़ा (भीम)

8. चतरसिंह ग्रेनेडियर कानियाखेड़ा (भीम)
9. केसरसिंह ग्रेनेडियर बोरवा (भीम)
10. किशनसिंह ग्रेनेडियर कालागुमान (भीम)
11. लालसिंह ठिकरवास (भीम) भारत-पाक 1971
12. हजारीसिंह अतीतमंड (ब्यावर) 1971
13. पूरणसिंह भीला कानूजा (पाली)
14. अमरसिंह कालिंजर (ब्यावर)
15. मोबसिंह बड़लिया (अजमेर)
16. विजयसिंह रामपुरा (खरवा) ऑब्ल्यु स्टार 1984
17. औंकारसिंह सिरौला ताल, भीम 1987
18. बाबूसिंह सेंदड़ा काश्मीर 1992
19. सोहनसिंह कोटड़ा, ब्यावर नागालैण्ड 1996
20. टीलसिंह काबरा काश्मीर 1996
21. गोरधनसिंह कोटड़ा काश्मीर 2000
22. नरेन्द्रसिंह सिपाही जेतपुरा (सेंदड़ा) ऑ. पवन 1987
23. भंवरसिंह ग्रेनेडियर रक्षक 1996
24. रतनसिंह नायक थोरिया (भीम) रक्षक 1998
25. नारायणसिंह सिपाही परतों का चौड़ा (भीम) कारगिल 2000
26. निम्बसिंह हवलदार राजवा (भीम) उरी संघर्ष 2018
27. नारायण गुर्जर, बिनोल (राजसमंद) पुलवामा 2019
28. छगनलाल चंदेल बड़ाखेड़ा (ब्यावर) 2008
29. हजारीसिंह किशनपुरा (ब्यावर) 2017

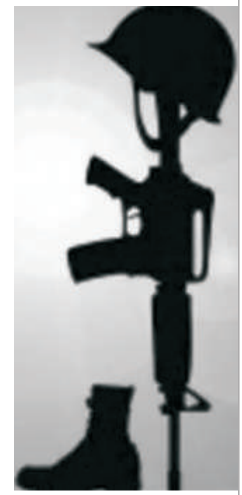

सभी शहीद परिवारों को मिले सम्मान और सहायता

वर्तमान समय में इलेक्ट्रॉनिक, प्रिंट व सोशियल मीडिया से खबरों का प्रसारण बहुत तेज गति से जन- जन तक पहुंच जाता हैं। वर्तमान शहीदों को सम्मान व सरकारों के साथ जनसहयोग से भी आर्थिक सहयोग मिलता है। पूर्व शहीदों के परिवारों को पहले बहुत कम आर्थिक सहायता मिलती थी। उनके परिजन आज भी शहीद परिलाभों से वंचित होकर बेहद गरीबी की दशा में जीवन यापन कर रहे हैं। सरकारों व भामाशाहों से अपील है कि भूतपूर्व शहीदों के परिवारों को भी सुविधाएं, सहायताएं देकर उनका जीवन स्तर सुधारने का प्रयास करें।

गोविन्दसिंह चौहान
भागावड़, भीम
मो. 9783207045

जिला चिकित्सालय स्वस्थ, मगर व्यवस्थाएं है बीमार

लापरवाही किसकी ? : लेबर रूम की बजाय फर्श पर हो रहे प्रसव

कहीं डॉक्टर के इंतजार में बीमारों की भीड़, तो कई डॉक्टर कर रहे मरीज का इंतजार

एक तरफ बेड नहीं होने से गैलेरी में बैठे मरीज, दूसरे वार्ड में खाली पड़े है बेड

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

आरके राजकीय जिला चिकित्सालय सर्व सुविधाओं से परिपूर्ण, चिकित्सा विशेषज्ञों, नर्सिंगकर्मियों की बड़ी टीम के साथ एक्सरे, डिजिटल एक्सरे, सोनोग्राफी से लेकर सिटी स्कैन तक के सारे सुविधाओं से लैस होने के बावजूद समुचित उपचार नहीं मिलने से मरीज दर दर की ठोकरे खाने को मजबूर है। इसकी मुख्य वजह यहां की लापरवाहीपूर्ण व्यवस्थाएं और पुख्ता मॉनिटरिंग न होना है। स्वच्छता के आधार पर कायाकल्प योजना के तहत राजस्थान में लगातार तीन बार अव्वल रहने वाले जिला चिकित्सालय की जमीनी हकीकत कुछ और ही सामने आई। मुफ्त इलाज की आशा लेकर आने वाले मरीज से अस्पताल के मुख्य द्वार से पहले ही पार्किंग वाला 10-10 रुपए खौंस लेता है। फिर चिकित्सक से परामर्श, जांच से लेकर ऑपरेशन तक मरीज पहुंचता है, तो यह मुफ्त का इलाज उसे हजारों रुपए में पड़ता है।

कुछ ऐसे ही हालात **जयवर्द्धन पत्रिका टीम** की पड़ताल में सामने आए हैं।

28 फरवरी सुबह करीब 11 बजे तक जिला अस्पताल में एक फिजिशयन कक्ष में भी नहीं पहुंचे, जबकि उनके लिए दो दर्जन से ज्यादा लोग करीब एक से डेढ़ घंटे से खड़े थे। इसी तरह दूसरे कक्ष में कुछ डॉक्टर बैठे थे, जो मरीज का इंतजार कर रहे हो। फिर सर्जीकल वार्ड की तरफ गए, तो वहां टॉयलेट एक युरिनल टूटा पड़ा हुआ था, तो दूसरी तरफ शौचालय द्वार के पास टाइल्स उखड़ी हुई थी। अस्पताल के शौचालय में इस तरह की गन्दगी देखकर तो कायाकल्प योजना में चयन होने पर ही सवाल खड़ा हो गया। अगर इस तरह की अव्यवस्था होते हुए भी यह अस्पताल पूरे राजस्थान में प्रथम आता है, तो इससे बदत्तर हालात और क्या हो सकते हैं।

बेड चाहिए तो डॉ. गुंजन से कराओ इलाज

सर्जीकल वार्ड में देखा कि एक मरीज के परिजन नर्सिंग स्टाफ से वार्ड में बेड उपलब्ध कराने की गुहार लगा रहे थे। इस पर नर्सिंगकर्मी का जवाब था कि डॉ. मीणा सर के वार्ड में कोई बेड खाली नहीं है, इंतजार करना पड़ेगा। मगर वहां देखा कि पास के ही वार्ड में कई बेड खाली पड़े थे, जिसके बारे में पूछने पर नर्सिंगकर्मी बोली कि ये वार्ड तो डॉ. गुंजन का है और उन्होंने स्पष्ट मना कर रखा है कि मेरे ही मरीज को इस वार्ड में बेड मिलेंगे। आपने डॉ. मीणा सर से इलाज कराया, तो आपको उन्हीं के वार्ड में बेड जब खाली होगा, तब मिल जाएगा। इसमें मैं क्या कर सकती हूं। क्योंकि डॉक्टर्स ने अपने अपने वार्ड बांट रखे है और उनके वार्ड में उनके द्वारा उपचाररत रोगी को ही उनके वार्ड में बेड मिल सकते हैं। यही यहां की व्यवस्था है।

क्या बोले अधिकारी

फर्श पर प्रसव होने के आरोप गलत है। पहले बेड आवंटित होता है फिर प्रसव। हमारे यहां हर माह 700 डिलेवरी होती है, मगर ये शिकायत कोई नहीं कर सकता। अगर किसी भी कक्ष में बेड खाली है, तो मरीज को शिफ्ट करते हैं। बेड के लिए इंतजार नहीं करना पड़ता है। सिजेरियन डिलेवरी के नाम पैसे किसी से लिए है, इस तरह की शिकायत नहीं आई। लिखित शिकायत आए, तो सख्त कार्रवाई करेंगे। ट्रोमा हाउस में मरीजों को इंतजार करना पड़ता है। इमरजेंसी के साथ डॉक्टर तय करता है कि किसका पहले ऑपरेशन करना है।

नरेन्द्र पालीवाल, प्रमुख चिकित्सा अधिकारी
आरके राजकीय जिला चिकित्सालय राजसमंद

आहत की जुबानी, इलाज की कहानी

सिजेरियन डिलेवरी करानी है, तो देने ही होंगे 5 हजार

जनाना अस्पताल में कोई भी सिजेरियन डिलेवरी बगैर डील के नहीं होती। कांकरोली के दिनेश ने बताया कि आरके जिला अस्पताल में प्रसव पीड़ा होने पर उसके छोटे भाई की पत्नी को लेकर गए, तो गायनिक ने सिजेरियन प्रसव करवाने के लिए सहायक कर्मचारी से उपचार समझने की सलाह दी, जो जिला अस्पताल में भी कार्यरत है। अस्पताल से छुट्टी के बाद गायनिक के घर सहायककर्मी की ड्यूटी देता है। जब सहायककर्मी से मिले, तो उसने बताया कि 5 हजार रुपए पहले देने पड़ेंगे, तभी अस्पताल में ऑपरेशन होगा। ऐसे वक्त में मजबूरन पांच हजार रुपए दिए, तब गायनिक ने अस्पताल पहुंचकर सिजेरियन प्रसव कराया। इसी तरह सभी प्रसूताओं की मिलीजुली कहानियां है।

ऑपरेशन के लिए आठ से दस दिन का इंतजार

ट्रोमा हॉस्पीटल में भर्ती मरीज के हालचाल पूछते हुए मालूम चला कि कई लोग ऑपरेशन के इंतजार में 8 से 10 दिनों से अस्पताल में भर्ती है। वहीं बीच में कुछ रसूखदार या डॉक्टर के घर पर मिलकर आने वाले मरीज अपना ऑपरेशन करवा कर घर लौट रहे हैं। एक मरीज ने अपने बड़े नेता से फोन करवाया, तो उसका दूसरे ही दिन ऑपरेशन हो गया, जबकि एक मरीज 8 दिन से ऑपरेशन के इंतजार में बेड पर सोया हुआ था।

वार्डबॉय नदारद, परिजन ही चला रहे स्ट्रक्चर

अस्पताल परिसर में एक्सरे, सोनोग्राफी, सिटी स्केन के लिए मरीजों को इधर से उधर ले जाने के लिए स्ट्रक्चर परिजनों को खुद ही चलाना पड़ता। अनुभवहीनता के कारण ऊबड़ खाबड़ रास्ते में स्ट्रक्चर चलाना बड़ा जोखिमभरा है, जिससे हर वक्त मरीज के गिरने का खतरा बना रहता है। अगर मरीज के साथ महिला परिजन हो, तो वह अक्सर इधर उधर मुंह ही तकती रहती है।

तीन दिन तक मरहम पट्‌टी भी नहीं

सर्जिकल वार्ड में भर्ती मरीज, जिनकी पीठ से गांठ निकालने के बाद भर्ती थे। वे बता रहे थे कि तीन दिन से कोई पट्टी करने वाला तक नहीं आया। इस तरह के

हालात से न सिर्फ चिकित्सक, बल्कि नर्सिंग स्टाफ की कार्यशैली पर भी सवाल उठ रहे हैं। ठीक ऐसे ही हालात हर शख्स के बने हुए हैं।

ऑपरेशन नहीं करना चाहते, तो यूं टरकाते डॉ.

आरके जिला चिकित्सालय में सांगठकला के खुमानसिंह हर्निया का ऑपरेशन कराने के लिए सर्जन से मिले, जिन्होंने सभी आवश्यक जांचें करवाने पर सबकी रिपोर्ट सामान्य मिली। फिर भी रिपोर्ट देखकर डॉक्टर बोले- कि ये वृद्ध है, जिनकी जान पर भी बन आ सकती है। मरीज के सामने इस तरह से डराया, जिससे न सिर्फ मरीज खौफजदा हो गया, बल्कि परिजन भी सकते में आ गए। डॉक्टर बोले- उम्रदराज है, जिससे इनका ऑपरेशन कठिन है और रिस्की भी। फिर भी आप कहते हो, तो मैं ऑपरेशन को तैयार हूं, मगर आपने काफी देरी कर दी है। इस तरह परिजनों को डराकर टरका दिया। बाद में उनका अन्य अस्पताल में हर्निया का ऑपरेशन कराया गया, जहां मरीज को कोई परेशानी नहीं हुई।

वार्ड के बाहर गैलेरी में ही हो रहे प्रसव

जनाना अस्पताल में गए, जहां के हालात लेबर रूम के पैन से ज्यादा खौफनाक सामने आए। एक परिचित मिले, तो बताया कि उनकी पुत्रवधू को 22 फरवरी दोपहर 2.30 बजे अस्पताल लाए, मगर उसे बेड ही नहीं मिला और प्रसूता दर्द के चलते गैलेरी में फर्श पर ही सो गई। यही नहीं, रात 11 बजे तक भी बेड नहीं मिलने से गैलेरी में फर्श पर ही प्रसव हो गया। फिर ताबड़तोड़ फर्श पर ही नाल काटने से लेकर संबंधित जरूरी प्रक्रिया पूरी करने के बाद प्रसूता को बेड पर सुलाया गया। वो बता रहे थे कि उसी दिन शाम 4 बजे एक अन्य प्रसूता ने भी इसी तरह फर्श पर ही बच्चे को जन्म दिया और नर्सिंगकर्मियों ने फर्श पर ही लैबर रूम की सारी क्रियाएं कर डाली। एक तरफ संस्थागत प्रसव बढ़ाने के लिए सरकार ऐढ़ी से चोटी तक जोर लगा रही है, मगर जिला अस्पताल के हालात देखकर तो लोग घर पर प्रसव कराना ही बेहतर मान रहे हैं।

एक शारीरिक शिक्षक ने बदल दी लवाणा विद्यालय की तस्वीर

कहते हैं बच्चे का पहला गुरू अपने मां बाप ही होते हैं। समाज सेवा की बचपन से जो अलख मनोज हाड़ा में जगी है, वह उनके पिता भगवतीप्रसाद हाड़ा और मां झमकूदेवी की ही देन है। एक शारीरिक शिक्षक कहने को एक छोटा सा शब्द नाम मात्र है, लेकिन एक छोटा शब्द अपनी मेहनत, इच्छाशक्ति व लगन से कब बड़ा हो जाए कह नहीं सकते हैं। इतिहास गवाह है संसार में नाम उन्हीं का हुआ, जिन्होंने बिना नाम के लिए अपना तन, मन, धन समर्पण कर समाजसेवा में दिन रात एक कर उन लोगों को आगे बढ़ाने के लिए एक पुल का काम किया है।

मनोज का जन्म 20 सितंबर 1977 को कांकरोली (राजसमंद) में हुआ। बचपन से ही खेलने के शौकीन रहे मनोज ने अपनी स्कूली पढ़ाई के साथ साथ फुटबॉल में अपना परचम लहराना शुरू कर दिया और नगर में संचालित किंग क्लब में गुरु बाबूलाल सर्वा, ओम व्यास, नंदलाल पालीवाल के निर्देशन में खेल के कई गुर सीखे और आगे बढ़ते रहे। निव्या क्लब राजस्थान और 12 बार नेशनल फुटबॉल में अपना प्रतिनिधित्व किया। इनकी प्रारंभिक शिक्षा सरस्वती बाल निकेतन और श्री बालकृष्ण उच्च माध्यमिक विद्यालय कांकरोली से हुई। आगे की पढ़ाई के लिए आर्ट्स कॉलेज कैम्पस उदयपुर में दाखिला लिया। फिर शारीरिक शिक्षक बनने के लिए आवेदन किया।

इसी बीच जिंदगी के कई उतार- चढ़ाव के बावजूद एक सफल व्यवसायी की जब 2013 में राज्य सरकार द्वारा शारीरिक शिक्षक के पद पर राजसमंद जिले के लवाणा गांव में नियुक्ति हुई, तो वहां के हालात देखकर मन में एक अजीब सी हलचल हुई। मन उनका काफी सोच में पड़ गया कि सरकारी स्कूल का यह ढांचा उनके समझ में नहीं आया और उसी दिन

उन्होंने ठान लिया कि मैं अपने कर्तव्य पर पूरा खरा उतरूंगा। सरकार ने मुझ पर भरोसा किया है तो मैं उस कार्य को सभी के सहयोग से शिखर तक पहुंचाऊंगा। धीरे धीरे गांव के गणमान्य लोगों से मुलाकात कर स्कूल सीमा से सटे हुए ग्राउंड का हाल जो बहुत बुरा था, उसको जन सहयोग द्वारा साफ कराया और उसी वर्ष जिला स्तरीय फुटबॉल प्रतियोगिता का आयोजन कराया। गांव के लोगों का उत्साह चरम पर था।

इनका और गांव के लोगों के विचारों में काफी समानताएं होने पर यह विद्यालय आज राजसमंद जिले ही नहीं, बल्कि राजस्थान और पूरे भारत में एक उदाहरण के तौर पर सामने आया है। आज यह विद्यालय जिला स्तरीय जिमनास्टिक, कुश्ती, टेबल, टेनिस की प्रतियोगिताएं कराकर क्षेत्र के छात्र छात्राओं को खेलों के प्रति प्रेरित व प्रोत्सोहित कर रहा है।

यहां के बच्चे राष्ट्रीय स्तर पर भी अपना परचम लहरा चुके हैं। फुटबॉल में अनिल कुमावत और बैडमिंटन में अस्मिता सरूपरिया ने प्रतिनिधित्व किया। इस विद्यालय की एक खास बात यह है कि यह देखने में किसी बड़े शहर का निजी विद्यालय लगता है।

लवाणा स्कूल के प्रतिभावान छात्र छात्राओं को दिखाया संसद भवन

लवाणा स्कूल में अत्याधुनिक टॉयलेट

यहां के ग्रामवासियो और जन सहयोग से शानदार और आकर्षक प्रवेश द्वार, बच्चों के पानी पीने के लिए आरओ वाटर कूलर, सुंदर सुसज्जित अच्छे फर्नीचर से युक्त क्लास रूम, हवा के लिए कूलर, रोशनी के लिए सोलर प्लांट, बच्चों की सुविधा के लिए कीटाणु रहित शौचालय, मनोरंजन के लिए एलईडी टीवी, खेलने के लिए ग्रास लगा खेल मैदान, टेनिस और वॉलीबॉल कोर्ट विकसित किया। अच्छे परिणाम देने वाले छात्र छात्राओं को गत माह हवाईयात्रा से दिल्ली भ्रमण के लिए ले जाया गया, जहां पर छात्रों को संसद भवन, राष्ट्रपति भवन, इंडिया गेट दिखाया गया और उसके इतिहास से अवगत कराया। वहां पर गृहमंत्री, लोकसभा सांसद, राज्यसभा सांसद से लेकर सेंट्रल हॉल तक बच्चों को भ्रमण कराया। वहां की कार्यशैली से बच्चों को अवगत कराया गया। बच्चों को पढ़ाई के साथ मानवीय एवं नैतिक मूल्यों पर काफी जोर दिया जाता है। इसके चलते आज बच्चे समाज के सामने निखर कर आ रहे, जहां आज सरकारी स्कूलों में निरंतर घटते हुए बच्चों को देखा जाता है, वहीं लवाणा विद्यालय में यह संख्या 150 से बढ़कर आज 225 तक पहुंच गई है। यहां अध्ययनरत छात्रों का परिणाम शत प्रतिशत और प्रथम श्रेणी में बोर्ड परिणाम 90 फीसदी रहा है। यहां बच्चों को मोटिवेशन क्लास से उनके मनोभावों को प्रबल बनाने का संकल्प हर शिक्षक अपने स्तर पर पूर्ण रूप से कर रहा है। यहां की पंचायत की भी इसमें अहम भूमिका है। स्वच्छ भारत की झलक भी हमें यहां देखने को मिल ही जाती है। मनोज राज्य और केंद्र सरकार से यह कहना चाहते हैं कि हर गांव में बच्चों के खेलने के लिए ग्राउंड और इनडोर हॉल की स्थापना की जाए। सभी विद्यालयों में शारीरिक शिक्षक की नियुक्ति हो और उनकी जवाबदेही सुनिश्चित की जाए। बच्चों को अच्छी सुविधाएं और टूर्नामेंट में आने-जाने, खाने- पीने की व्यवस्थाओं को सुधारा जाए, जिससे बौद्धिक विकास के साथ साथ शारीरिक विकास भी बच्चों का बढ़ता हुआ नजर आए। सभी विद्यालयों में खेलों का बजट बढ़ाया जाए, जिससे एक नए भारत के सपने को साकार किया जा सके। प्रकृति प्रेमी शिक्षक अपने स्वभाव और अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति, मेहनत, लगन से आज सभी का दिल जीत चुके हैं। इनके व्यवहार से विद्यार्थी किताबी ज्ञान के साथ सच्ची मानवता का पाठ भी पढ़ रहे है जो उनके जीवन को सफल बनाने में सहायक होगा।

आज देश को ऐसे साक्षात् उदाहरणों की बहुत जरूरत है।

राजसमंद को ऐसे शिक्षक पर अभिमान है।

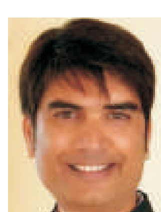

राहुल दीक्षित
कांकरोली

तीखी मिर्ची

ऑफ द रिकॉर्ड :
जयवर्द्धन के इस कॉलम के लिए आप भी सुझा सकते हैं, आमजन से जुड़ा कोई मुद्दा, लिख भेजिएं-
E-mail : jaivardhanpatrika@gmail.com
वाट्सएप करें - 94142-39648

बढ़ते वेतन पर कम होती जवाबदेही

विजय शर्मा @ राजसमंद
liverajsamand.com

बचपन में सन् 1986 में मुझे उदयपुर सरकारी अस्पताल में 15 दिन ईलाज के लिए रूकना पड़ा। इस दौरान अस्पताल में डॉक्टर्स, नर्सिंग स्टाफ सहित बैड व अन्य संसाधनों की बड़ी कमी हुआ करती थी। बैड के अभाव में मरीज फर्श पर भी सो जाया करते थे। मगर डॉक्टर एक-एक मरीज का पूरा ख्याल रखते थे। उनके चेहरे के हाव-भाव व मुस्कान,मरीजों से उनका बातचीत का ढंग और सहज व्यवहार बड़ी से बड़ी बीमारी में मरीजों का मनोबल बढ़ा देता था। मैं हमेशा दैनिक जांच पर आने वाले डॉक्टर का इंतजार किया करता था। मुझे उन पर भगवान तरह बड़ी श्रद्धा होती थी। अक्सर डॉक्टर मरीजों से पूछते थे काकाजी अब कैसे हो, अब जल्द ठीक हो जाओगे, अब बीड़ी मत पीना उनके कहने का अंदाज भगवद वाक्य सा होता था। मरीज भी उनका बड़ा सम्मान करते थे। कम संसाधनों के बावजूद सभी डॉक्टर मिलकर मरीजों का उत्तम ईलाज करने का भरसक प्रयास करते थे। तब डॉक्टर तो क्या कम्पाउंडर भी बड़ी जिम्मेदारी के साथ अपने कार्य निर्वाहन करते थे। मगर समय के दौर में मरीज और डॉक्टर सभी बदल गए।

आजकल ज्यादातर सरकारी अस्पताल आधुनिक चिकित्सा संसाधनों, बड़े नर्सिंग स्टाफ एवं चिकित्सा विशेषज्ञों से परिपूर्ण हैं। सरकार का बड़ा बजट चिकित्सा पर खर्च हो रहा हैं। इसके बावजूद सरकार अस्पतालों में जवाबदेही दिनों दिन घटती जा रही हैं। जहां कभी कम संसाधन व कम तनख्वाह के बावजूद अपने मरीजों के प्रति उत्तम व्यवहार व उत्तम चिकित्सा दी जाती थी। वहीं सर्वसुविधाओं व बड़ी तनख्वाह पाकर भी मरीजों के साथ दुरव्यवहार व मरीजों को एक बोझ समझकर ईलाज किया जा रहा हैं। नर्सिंग स्टाफ व डॉक्टर का चिड़चिड़ा व्यवहार मरीजों को भयभित कर देता है। अक्सर मरीजों को बडी बीमारी का भय दिखाकर बडे अस्पताल रेफर कर दिया जाता है या किसी बड़े निजी डॉक्टर का नाम बताकर भेज दिया जाता हैं। ऐसे में कई लाचार मरीज दर-दर की ठोकरे खाने को मजबूर हैं। समुचित प्रबंधन के अभाव व डॉक्टर की मनमानी के कारण अस्पताल में बैड उपलब्ध होने के बावजूद मरीजों को बैड तक नसीब नहीं हो रहा हैं। संस्थागत प्रसव बढ़ाने की दिशा में काफी सरकारी योजनाएं चल रही हैं। प्रसुताओं को कई तरह के प्रलोभन देकर सरकार नवजात शिशु मृत्यु दर कम करने में लगी हुई हैं। मगर अस्पताल के लैबर रूम सिर्फ दिखावटी बने हुए हैं और जिम्मेदारों की लापरवाही के कारण आज भी कई प्रसव फर्श पर हो रहे हैं। कई बड़ी-बड़ी कम्पनियां अपनी महंगी दवाईयों की बिक्री के लिए डॉक्टर को अपना माध्यम बना रही हैं। वहीं बड़े-बड़े निजी अस्पताल वाले मरीजों को बढ़ाने के लिए सरकारी कार्मिकों, एम्बुलेंस, मेडिकल स्टोर वालों को प्रलोभन दे रहे हैं। कई सरकारी डॉक्टर बड़े वेतन के बावजूद सरकारी संसाधन का उपयोग करके भी मरीजों से ऑपरेशन के नाम पर पैसे बटोर रहे हैं।

ऐसा नहीं हैं कि सभी डॉक्टर अनैतिक कार्य कर रहे हैं मगर जहां पूरे कुए में भांग गुली हुई हो तो कोई कितने दिन तक बच कर रह सकता हैं। कहने को सरकार द्वारा मरीजों के ईलाज पर प्रतिक्रिया जानने के लिए उनके फोन पर मैसेज किया जा रहा हैं, मगर सच्चाई उन तक पहुंचने के बावजूद हालात जस के तस बने हुए हैं। सरकार अस्पताल की स्वच्छता के लिए मोटा बजट दे रही हैं। कई सरकारी अस्पताल स्वच्छता में अव्वल रहकर पुरस्कृत हो चुके हैं। लेकिन हकीकत में जमीनी स्तर पर देखा जाए तो बदबू दार टॉयलेट, अस्पताल में गंदगी से मच्छरों की भरमार से मरीजों को खासी परेशानी झेलनी पड़ती हैं। स्वच्छता मानों कागजों में ही दौड़ रही हैं।

असली प्रश्न यह खड़ा होता हैं कि जहां एक तरफ देश में कई शिक्षित बड़ी-बड़ी डिग्रीयां लेकर भी बेरोजगार घुम रहे हैं, कई युवा पांच से दस हजार की नौकरियां करने को मजबूर हैं। मगर सरकारी नुमाइंदे सरकारी नौकरी में आकर बड़ी तनख्वाह, बड़े भत्ते, बड़ी-बड़ी सुविधाएं पाकर भी क्यों नहीं संतुष्ट हो पाते हैं? उनके मन की आर्थिक भूख क्यों नहीं शांत हो पाती हैं? अपने कार्य स्थल पर पूर्ण जिम्मेदारी के साथ क्यों नहीं कार्य करना चाहते हैं? आम जनता से सरकार टेक्स वसूल कर इन सरकारी कर्मचारियों को मोटा वेतन देते हैं बावजूद इसके जनता इन सरकारी कर्मचारियों के कार्य से क्यों नहीं संतुष्ट हो पाती हैं?

मीडिया नैतिकता समझे, जनता एकजुट हो जाए तो किसी की हिम्मत नहीं भारत की तरफ आंख उठाए ?

40 सैनिकों की शहादत के बाद देश किस तरह का खालीपन महसूस कर रहा है। ये अन्तिम विदाई की तस्वीरों के साथ उमड़ रही जन भावनाओं में महसूस किया जा सकता है। इस मौन में देश ने ख़ामोशी के साथ साथ शहीद जवानों के घर वालों की चीखें भी महसूस की हैं। देश ने इन शहीद जवानों के उस आखिरी पल के बारे में भी सोचा होगा। ये ख़ामोशी बहुत भारी थी और बहुत से लोगों ने ये भी सोचा होगा कि ये तूफान से पहले की खामोशी है। भविष्य में क्या होगा, ये किसी को नहीं पता।

बिनोल के शहीद नारायण की पार्थिव को कंधा देते कलक्टर, एसपी व अन्य।

भारत की सेना ने क्या प्रतिक्रिया दी, कौनसा जवाब दिया, ये अब सबको पता है। इसलिए देश के लोगों को संकट की इस घड़ी में एकजुट होकर रहना चाहिए और अपनी पराक्रमी सेना पर भरोसा करना चाहिए। शहीदों के 40 ताबूत जब एक साथ रखे हुए दिखाई दिए, तब से देश का मन दुखी होने के साथ साथ क्रोधित भी है। शहादत की इन तस्वीरों में गर्व तो होना चाहिए, लेकिन इस गर्व में दुख की मात्रा ज्यादा है। अब ये बंद होना चाहिए।

ये शहादतें अब रुकनी चाहिए, जो मातम इन शहीदों के घरों में और 135 करोड़ लोगों के मन में है। वो मातम उनके घरों में होना चाहिए, जिन्होंने ये दुस्साहस किया है। फिदायीन हमलावर ने जब 100 किलो से ज्यादा विस्फोटक जवानों की गाड़ी से टकराया तो पूरी गाड़ी के परखच्चे उड़ गए। क्या बीती होगी उन परिवारों पर जब उनके अपने ये जवान तिरंगे में लिपटे हुए ताबूत के अंदर घर पहुंचें होगें। इसी पीड़ा को गृहमंत्री राजनाथसिंह ने भी महसूस किया और इन शहीदों के ताबूतों को कंधा दिया। शहीदों के ताबूत सबसे ज्यादा भारी होते हैं। ये बात उनके घरवाले तो समझते हैं, लेकिन पूरे देश के लोगों को ये बात समझनी चाहिए। शोक की इस भावना के नीचे प्रतिशोध की ज्वाला भी धधक रही है। देश ने इन वीर जवानों को श्रद्धांजलि दी और ये उम्मीद की कि ये आखिरी बार हो, इसके बाद हमें ये दिन न देखना पड़े।

बीते 14 फरवरी को जम्मू कश्मीर में आतंकी हमले में सीआरपीएफ के 44 जवान शहीद हो गए। यह एक आतंकी हमला मात्र नहीं था। यह देश के खिलाफ एक युद्ध था। कारगिल युद्ध में 527 भारतीय जवान शहीद हुए थे। यह युद्ध 60 दिनों तक चला था। इस हिसाब से देखें तो कारगिल युद्ध में हर दिन देश के 9 जवान शहीद हो रहे थे, लेकिन अवंतीपुरा में एक ही दिन में 44 जवान शहीद हुए हैं। इसीलिए भारतीय सेना की इस बार की रणनीति आतंकी हमले के खिलाफ नहीं, बल्कि युद्ध जैसी है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि कश्मीर में सुरक्षाबलों ने आतंकियों की कमर तोड़ दी है। वर्ष 2018 में सेना ने कश्मीर घाटी में 250 से ज्यादा आतंकियों को मार गिराया था। हमले के तुरंत बाद ही इसकी जिम्मेदारी जैश-ए-मोहम्मद ने ली थी। पिछले वर्षों से सुरक्षा बल लगातार इसी संगठन के आतंकियों को चुन चुन कर मार गिरा रहे हैं। इस आतंकवादी संगठन ने सिर्फ इस बार ही देश को लहूलुहान नहीं किया है। जैश-ए-मोहम्मद का एक पुराना खूनी इतिहास है और जैश-ए-मोहम्मद से जुड़ी एक ऐसी कड़वी सच्चाई है, जो एक राष्ट्र के तौर पर हमारे लिए किसी कलंक से कम नहीं हैं। 24 दिसंबर 1999 को हरकत उल मुजाहिद्दीन के आतंकियों ने भारतीय एयरलाइंस की फ्लाइट को अगवा कर लिया था। उस दौरान भारतीय यात्रियों की रिहाई के लिए तत्कालीन सरकार को मसूद अजहर सहित तीन आतंकियों को रिहा करना पड़ा था। बाद में इसी आतंकी ने जैश-ए-मोहम्मद को बनाया था। तब से लेकर आज तक इसने भारत के सीने पर बड़े बड़े घाव दिए हैं। देश की संसद पर हुआ आतंकवादी हमला, जम्मू कश्मीर विधानसभा पर हमला और पठानकोट एयरबेस पर हुआ आतंकवादी हमला। यह सब मसूद अजहर और जैश मोहम्मद ने करवाए थे।

1999 में कंधार हाईजैक कांड में मसूद अजहर को छोड़ना देश को कितना महंगा पड़ा ? उस वक्त भारत सरकार ने 199 यात्रियों की रिहाई के लिए इसे कंधार छोड़ा था। सीआरपीएफ के 44 जवानों की शहादत के बाद से ही पूरा देश आक्रोशित है, जबकि आज से 20 वर्ष पहले 199 यात्रियों की रिहाई के लिए लोगों ने मसूद अजहर को छोड़ने के लिए धरने प्रदर्शन किए थे। उस समय मीडिया और देश के लोगों ने आतंकियों की रिहाई के लिए सरकार पर हर तरह का दबाव बना दिया था। एक राष्ट्र के रूप में हम कितने कमजोर हैं। इसका अंदाजा इस घटना से लगाया जा सकता है। अगर 1999 में हम एक साथ खड़े होते और एक राष्ट्र के तौर पर देश का मीडिया लोगों को सही बात बताने का फर्ज अदा करता, लोग यह सोचते कि देश की सुरक्षा के लिए हम अपने लोगों की कुर्बानी देने को तैयार है। जिस तरह सैनिक देश की सुरक्षा के लिए देता है, तो आज मसूद अजहर हमारे ही देश की किसी जेल में सड़ रहा होता। जैश-ए-मोहम्मद को भारत, कनाडा, यूएई और अमेरिका ने आतंकी संगठन घोषित किया हुआ है, लेकिन जैश के आतंकी पाकिस्तान में खुले आम घूमते हैं। ये पीओके में आतंकवादियों के प्रशिक्षण शिविर चलाता है। जहां आतंकियों को भारत के खिलाफ जेहाद फैलाने के लिए तैयार किया जाता है।

20 वर्ष पहले इस आतंकवादी को रिहा करने से देश की एक कमजोर राष्ट्र के रूप में छवि बनी थी। क्योंकि उस समय देश के लोग सरकार और सेना के साथ खड़े नहीं हुए। वहीं, संसद पर हमले के आरोपी अफजल गुरु की मौत पर हमारे देश के बहुत सारे पत्रकार, बुद्धिजीवी नेता और जेएनयू जैसे विश्वविद्यालय हैं, जो अफजल गुरु की मौत पर मातम मनाते हैं।

अब देश को पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद का स्थाई इलाज करने की दिशा में कड़े कदम उठाने की जरूरत है। इस दिशा में भारत सरकार ने मोस्ट फेवरेट नेशंस का दर्जा वापस लेकर कडे कूटनीतिक निर्णय लेने की शुरुआत भी की है।

इसके अलावा भारत की तरफ से 20 देशों के राजनेताओं को विदेश मंत्रालय बुलाकर इस हमले की जानकारी दी। वहीं, भारतीय विदेश सचिव विजय गोखले का संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के स्थाई सदस्य प्रतिनिधियों से बात करना, आसियान देशों के राजदूतों को बुलाकर हमले में पाकिस्तान की भूमिका के साक्ष्य देने से लेकर हर प्रकार के अंतरराष्ट्रीय दबाव बनाने की कोशिश की जा रही है, जिसमें भारत को अंतरराष्ट्रीय समुदाय का पुरजोर समर्थन भी मिल रहा है। वर्ल्ड ट्रेड ऑर्गेनाइजेशन के नियमों के आधार पर कारोबार में एमएफएन का दर्जा दिया जाता है। इसमें व्यापार में विशेष छूट दी जाती है। भारत ने 1996 में पाकिस्तान को एमएफएन का दर्जा दिया था। इसे वापस लिए जाने से पाकिस्तानी उद्योग धंधों पर प्रतिकूल असर पड़ेगा। पाकिस्तानी आतंकी ठिकानों पर वायु सेना की सफल कार्रवाई आतंकी मंसूबों को नाकाम करने और उनके पनाहगाहों को सबक सिखाने के दृष्टिकोण से अब तक की बड़ी कार्रवाई है। वायुसेना ने कार्रवाई को अंजाम देने के लिए अपने 12 मिराज फाइटर जेटों से एलओसी पार 1000 किलो तक बम गिराए, जिसमें आतंकी कैंपों में पनाह पा रहे 300 से ज्यादा आतंकी मार गिराए हैं। जिसे भारत ने कूटनीतिक रूप से अपनी आत्मरक्षा में असैन्य कार्रवाई करार दिया है।

इस समय भारत को पाकिस्तान पर कूटनीतिक दबाव बनाने के लिए दो प्रमुख कदम और उठाने की जरुरत है।

1. भारत को नदियों का रुख मोड़ देना चाहिए, जिससे अब यह पानी पाकिस्तान में नहीं जाए।

पिछले 71 वर्ष से भारत पाक पर दया कर रहा है, लेकिन पाकिस्तान ने भारत की इस दया को कमजोरी समझ लिया है। सिन्धु, रावि, सतलज, व्यास, चिनाव और झेलम नदिया भारत और पाक से होकर गुजरती हैं। अगर भारत चाहे तो इन नदियों का पानी रोक कर पाकिस्तान को एक रेगिस्तान में बदल सकता है। भारत पाक सिंधु जल समझौते के तहत सिंधु, रावी, व्यास, सतलुज, चिनाव और झेलम नदी के पानी का इस्तेमाल करते हैं। सिंधु जल समझौते के तहत भारत रावी, व्यास और सतलुज नदी के 100 फीसदी पानी का इस्तेमाल कर सकता है। इसी प्रकार झेलम, सिंधु और चिनाव नदियों के अधिकांश पानी को इस्तेमाल करने का अधिकार पाकिस्तान का है। वर्तमान स्थिति यह है कि इन 6 नदियों का अधिकतम पानी पाकिस्तान ही इस्तेमाल कर रहा है। सिंधु जल समझौते के तहत भारत के हिस्से में जो नदियां हैं। भारत अपने हिस्से की नदियों के पानी का 100 फीसदी हिस्सा इस्तेमाल नहीं कर पा रहा है। क्योंकि भारत ने अपने हिस्से वाली नदियों पर पर्याप्त बांध नहीं बनाए हैं। 2014 में रावी नदी पर भारत ने शाहपुर- केड़ी में बांध का निर्माण शुरू किया है। इसके अलावा रावी- व्यास लिंक का निर्माण किया जाना भी जरूरी है। ताकि भारत अपने हिस्से के पानी को रोक सके। भारत के पहले प्रधानमंत्री नेहरू ने सिंधु जल समझौते में पाकिस्तान के प्रति असीम उदारता बरती है, लेकिन अंतरराष्ट्रीय राजनीति में दुश्मन के प्रति उदारता बरतने से कोई लाभ नहीं होता है। भारत और पाक के बीच नदियों का बंटवारा वर्ष 1960 में हुआ था। सिंधु नदी समझौते के मुताबिक इन नदियों को पूर्वी और पश्चिमी नदियों में बांटा गया। पूर्वी नदियों पर भारत का अधिकार है। जबकि पश्चिमी नदियों पर भारत का अधिकार है। समझौते के अनुसार भारत बिजली बनाने और कृषि के लिए पश्चिमी नदियों का सीमित उपयोग कर सकता है। इस समझौते की वजह से देश को नुकसान उठाना पड़ रहा है। क्योंकि भारत से ही गुजरने वाली तीन प्रमुख नदियों को पश्चिमी नदियां कहा गया।

झेलम, सिंधु और चिनाव पर पाकिस्तान को असीमित अधिकार दे दिया गया। संधि के अनुसार भारत इन नदियों के सिर्फ20 फीसदी पानी का इस्तेमाल कर सकता है, जो एक बहुत बड़ा छलावा है। आज पाकिस्तान भारत के में खून बहा रहा है और भारत पाक में नदियों का शीतल जल बहा रहा है। अब समय आ गया है कि भारत अपने हिस्से की नदियों का पानी रोककर पाकिस्तान पर कूटनीतिक दबाव बनाए। पाकिस्तान पानी की कमी वाला देश है। भारत को नदियों को पाकिस्तान के खिलाफ एक हथियार के रूप में प्रयोग करना चाहिए। पाकिस्तान की कृषि भूमि की 75 फीसदी सिंचाई सिंधु नदी के माध्यम से होती है। भारत अगर पानी रोक दें, तो पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था घुटने टेक देगी। पाकिस्तान वैसे तो कश्मीर की आजादी की बात करता है, लेकिन पाकिस्तान उसी कश्मीर की नदियों के पानी को बड़ी बेशर्मी के साथ उपयोग करता आ रहा है। वहीं, सिंधु जल समझौते के मुताबिक भारत अपने हिस्से के पानी का भी इस्तेमाल नहीं कर पा रहा है। अगर भारत इस पानी का इस्तेमाल करें, तो जम्मू कश्मीर की सिंचित भूमि को 4.25 लाख एकड़ तक बढ़ाया जा सकता है। वहीं, सिंधु जल समझौते की वजह से जम्मू कश्मीर के बिजली उत्पादन पर भी असर पड़ा है।

2. क्रिकेट की दुनिया में पाकिस्तान पर कूटनीतिक दबाव बनाने की जरूरत

अब वक्त आ गया है कि भारत को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट संघ पर दबाव डालना चाहिए कि वह पाकिस्तान का बहिष्कार करें। भारत को आईसीसी के दूसरे सदस्य देशों पर भी दबाव डालना चाहिए कि वह पाकिस्तान के साथ खेलने का बहिष्कार करें। अगर आईसीसी और अन्य देश ऐसा नहीं करते हैं तो भारत को कुछ समय के लिए खेलकूद को भूल जाना चाहिए। खेलकूद शांति काल में होता है। युद्ध काल में नहीं। क्रिकेट मनोरंजन के लिए खेला जाता है, लेकिन देश में जो माहौल है। उसमें मनोरंजन के लिए कोई जगह नहीं है। एक और सीमा पर पाकिस्तान हमारे सैनिकों को शहीद कर रहा है। ऐसे समय में हमारे खिलाड़ियों का पाक के साथ मैच खेलना अनैतिक होगा। इसलिए वर्ल्ड कप और अन्य मैचों में भारत द्वारा पाकिस्तान का बहिष्कार किया जाना चाहिए। इससे हमारे खिलाड़ियों और स्पॉन्सर्स का बहुत बड़ा नुकसान होगा, लेकिन यह सब देश से बड़े नहीं हो सकते हैं। बीसीसीआई ने वर्ल्ड कप में पाकिस्तान के साथ खेलने का फैसला सरकार के ऊपर छोड़ दिया है। क्रिकेट के मैदान में जब पाक और भारत के खिलाड़ी एक दूसरे से हाथ मिलाएंगे। तब उन शहीदों के परिवारों पर क्या गुजरेगी। जिनके अपनों की जान पाक की वजह से गई है। एक तरफ पाकिस्तान के खिलाफ आक्रोश और दूसरी तरफ उनके खिलाड़ियों के साथ क्रिकेट मैच दोनों काम एक साथ नहीं हो सकते। यह बात सही है कि भारत और पाकिस्तान का क्रिकेट मैच क्रिकेट की दुनिया का सबसे बाहुबली मैच होता है। इससे खिलाड़ियों और प्रायोजकों को बड़ा लाभ होता है, लेकिन क्या बीसीसीआई के लिए क्रिकेट की कमाई देश से ज्यादा जरूरी है? आईसीसी के क्रिकेट टूर्नामेंट भारत की वजह से ही चलते हैं। आईसीसी की जो भी कमाई होती है। उसमें 80 फीसदी से ज्यादा कमाई भारतीय टीम की वजह से होती है। बात यहां यह महत्वपूर्ण नहीं है कि किसकी कितनी कमाई होती है। महत्वपूर्ण यह है कि हमें अपने सैनिकों की शहादत का प्रतिशोध कैसे लेंगे? अब सरकार को आईसीसी पर इतना दबाव बनाना चाहिए, जिससे आईसीसी पाकिस्तान का बाय काट कर दें। भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है। भारत के पास दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी सेना है।

आज क्रिकेट हो या दूसरा कोई क्षेत्र हो, भारत को कोई भी नजरअंदाज नहीं कर सकता है, लेकिन क्या हमको अपनी शक्ति का अहसास है। अगर भारत वाकई सुपर पावर बनना चाहता है, तो देश को अपने आक्रोश की पटकथा खुद लिखनी होगी। भारत चाहे तो सिर्फक्रिकेट ही नहीं ओलंपिक से भी पाकिस्तान को बाहर करवा सकता है। फुटबॉल और हॉकी की सर्वोच्च संस्था पर भी पाकिस्तान को बाहर करने का दबाव बना सकता है। दुनिया की हर बड़े कूटनीति मंच से पाक को धक्का देकर गिराने की जरूरत है। इसके लिए इच्छाशक्ति और कूटनीतिक तेजी की आवश्यकता है। इसके लिए हमारे खिलाड़ियों को भी त्याग करने की जरूरत है। क्योंकि कुर्बानी देने की जिम्मेदारी केवल सैनिकों की नहीं है? समाज के बाकी वर्गों को भी अपने सुखों का बलिदान करना होगा। तभी भारत पाकिस्तान को घुटनों पर टेक कर आतंकवाद रोकने के लिए मजबूर कर पाएगा।

देश के कुछ लोग चाहे तो वह प्रोफेशनल्स हो या युवा। अगर आज देश के लोगों ने अपने- अपने क्षेत्रों में पाकिस्तान का कूटनीतिक बहिष्कार नहीं किया और ऐसा सोच लिया कि कुर्बानी देने का जिम्मा तो केवल सैनिकों का है। भारत आज अगर ऐसा नहीं कर पाया तो आने वाली पीढ़ियों को पाकिस्तान हमेशा ऐसे ही परेशान करता रहेगा।

हमारे देश में यह तर्क बहुत प्रचलित है कि खिलाड़ी, अभिनेता और कला से जुड़े लोगों को सैन्य कार्रवाई और कूटनीति से अलग रखना चाहिए। एक तरफ सीमा पर हमारे जवान शहीद होते रहते हैं। दूसरी तरफ हम क्रिकेट मैच खेलकर और संगीत में प्रस्तुति देकर उनकी शहादत का अपमान करते हैं। अगर किसी दिन हमारे सैनिक भी यह कहना शुरू कर दें कि उनकी पाकिस्तान से निजी दुश्मनी थोड़े ही है, तो फिर क्या होगा?

अश्विनी शर्मा
छात्र काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी
ई मेल : ashwinibhu6396@gmail.com
मोबाइल : 94558-66133

हमारे क्षेत्रीय प्रतिनिधी जहां से
आप जयवर्द्धन
मासिक पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं एवं
वार्षिक बुकिंग कर सकते हैं।
भीम - हीरालाल भाट मो 99296396015
देवगढ़ - अभिषेक माहेश्वरी, मो. 97856-85611
रेलमगरा - रोशनलाल दुकलिया मो. 9414927728
आमेट - मॉडर्न स्टेशनर्स, लक्ष्मी बाजार, आमेट
खमनोर - दिलीप श्रीमाली, मो. 99285-60237
गोमती चौराहा, चारभुजा- भीमराज कोठारी मो. 9610973283
बिनोल - हितेश दवे मो. 7023480406
कुंवारिया - विनय दाधीच मो. 7665005378
नाथद्वारा - कीर्ति स्टेशनर्स, नई सड़क
गजपुर - प्रभदास वैष्णव मो. 7568485624
मोही - बाबूलाल कीर, मो. 98292-41423

आवश्यकता
मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए
पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की
जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : संपर्क 94142-39648

विराट व्यक्तित्व के धनी, गांधीवादी थे स्वतंत्रता सेनानी देवेन्द्र कर्णावट

गीता में कर्म का सिद्धांत दिया गया है। इन्सान अपने कर्म से ही यश की प्राप्ति करता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक के सफ़र में कर्मशील रहना ही जीवन का योग है, जो जिन्दगी को परहित और सेवा के मार्ग में लगा देता है, वह योगी है। इस बार जयवर्द्धन के माटी का लाल कॉलम में बात कर रहे हैं, एक ऐसी ही शख्सियत के बारे में जिन पर जितना लिखा जाए, कम ही लगता है, शायद। मैं भी इस विराट व्यक्तित्व को अपने शब्दों में पूर्णरूप से लिख ना पाऊं, मगर कोशिश करता हूं, कुछ पहलू छूने की।

आचार्य तुलसी के कथन से शुरू करते है, राजसमन्द के इस लाड़ले के बारे में। उन्होनें कहा था, देवेन्द्र जी का व्यक्तित्व अनेक घटकों का समावय है। उनकी कार्यक्षमता बेजोड़ है। कार्यकर्ताओं को साथ लेकर चलने की कला के साथ जीवन में कई उतार चढ़ाव देखे हैं। इनकी कहानी अपने आप में एक छोटी सी रामायण है। स्वतंत्रता संग्राम में राजसमन्द का नाम भी अग्रणी रहा है। नरेन्द्रपाल सिंह चौधरी, नन्दलाल जोशी, मा. किशनलाल शर्मा, प्रो. नारायणदास, फतहलाल बापू, रघुनाथ पालीवाल, रामबाबू शर्मा, हीरालाल देवपुरा, देवेन्द्र कुमार कर्णावट आदि स्वतंत्रता सेनानी है।

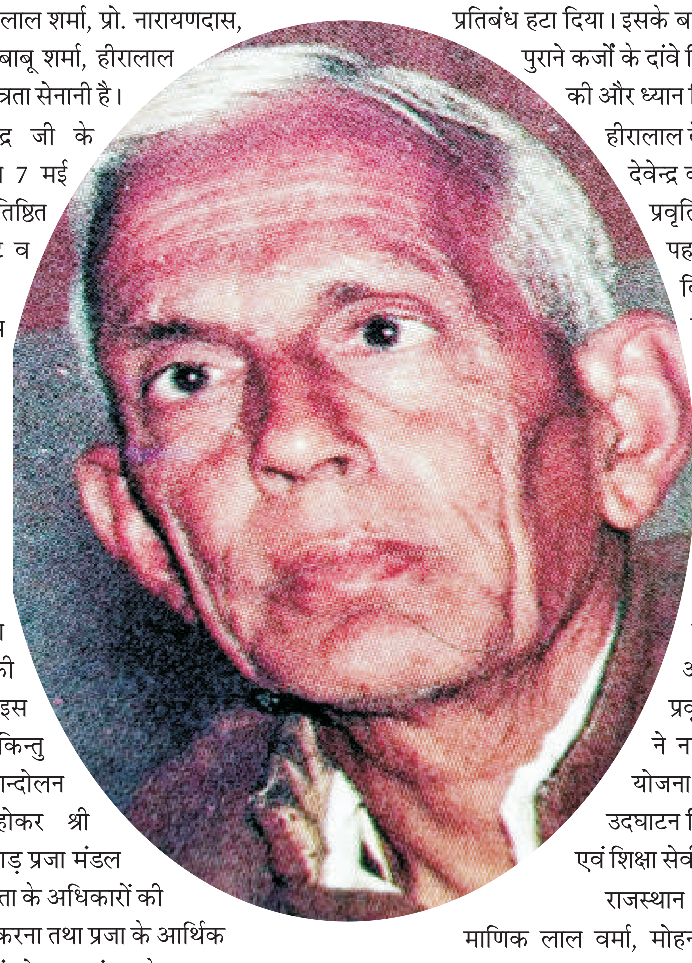

आज बात करते है, देवेन्द्र जी के बहुआयामी व्यक्तिगत पर। उनका जन्म 7 मई 1924 अक्षय तृतीया को राजनगर के प्रतिष्ठित जैन परिवार में पिता हीरालाल कर्णावट व माता गमेर बाई के घर हुआ।

कहते है कि जब उनका जन्म हुआ, तो उनके जीवित रहने की आशा नहीं थी। फिर गांव के पंडित जगन्नाथ ने बालक की कुंडली बना भविष्यवाणी की थी कि ये सतमासी बालक न सिर्फ जीवित रहेगा, वरन् राजनगर के नाम को भी देश में गौरवान्वित करेगा, जो सच साबित हुई। मनोहर कोठारी ने मुखर पुरूषार्थ में लिखा कि मेवाड़ राजस्थान का सर्वाधिक प्रतिष्ठित राज्य रहा है। मेवाड़ की राजधानी उस वक्त उदयपुर थी। यो तो इस राज्य में आन्दोलन बहुत हुए थे, किन्तु बिजौलिया सत्याग्रह और बेगूं किसान आन्दोलन की आंशिक सफलता से प्रेरित होकर श्री माणिकलाल वर्मा ने अप्रैल 1938 में मेवाड़ प्रजा मंडल की स्थापना की। इसका मुख्य अद्देश्य जनता के अधिकारों की रक्षा और संवैधानिक अधिकारों की रक्षा करना तथा प्रजा के आर्थिक कष्टों को दूर करना था। दो सप्ताह में सैकड़ों लोग इस संस्था के सदस्य बन गए।

उदयपुर राज्य के तत्कालीन प्रधानमंत्री धर्मनारायण जोशी ने इस संस्था को गैर कानूनी घोषित कर दी और माणिक लाल वर्मा को उदयपुर छोड़ने की आज्ञा दे दी। माणिकलाल वर्मा अजमेर चले गए और प्रेस के माध्यम से प्रचार करते रहे। 4 अक्टूबर 1938 विजयादशमी के दिन प्रजामंडल ने सत्याग्रह करने का निश्चित किया और मांग रखी कि प्रजामंडल को कानूनी मान्यता दी जाए। माणिकलाल वर्मा को पुन: उदयपुर में प्रवेश दिया जाए। अदमदाबाद और बम्बई में भी प्रजा मंडल की शाखा स्थापित की। महिलाओं ने भी इसमें भाग लिया। उधर मेवाड़ सरकार ने भी अपना दमन चक्र तेज कर गिरफ्तारियां, तलाशियां, निर्वासनों के साथ सजाएं एकाएक बढ़ा दी।

भीलवाड़ा और नाथद्वारा में लाठी चार्ज हुआ, जिसमें अनेक लोग घायल हो गए। भारतीय दंड संहिता के तहत धारा 144 लगा दी गई। मेवाड़ सरकार ने माणिकलाल वर्मा को गिरफ्तार कर बिना मुकदमा चलाए जेल में ठूंस दिया। उधर गांधीजी को जब मेवाड़ सरकार के इस दुर्व्यवहार की जानकारी मिली, तो महात्मा गांधी ने मेवाड़ प्रजा मंडल को सत्याग्रह स्थगित कर रचनात्मक कार्य करने की सलाह दी। गांधीजी को विश्वास था की मेवाड़ राज्य शीघ्र ही प्रजा मंड़ल से प्रतिबंध हटा देगी। 1941 में राज्य सरकार ने प्रजामंड़ल से प्रतिबंध हटा दिया। इसके बाद राज्य में प्रजा मंड़ल ने भीलो के सेवा कार्य, पुराने कर्जों के दांवे निपटाने, दलितों के उत्थान, शिक्षा और जनहित की और ध्यान दिया।

हीरालाल देवपुरा ने अपने आमुख में लिखा कि उस समय देवेन्द्र कर्णावट मेवाड़ प्रजा मंडल के साथ साथ अन्य प्रवृति भी चलाया करते थे। राजसमन्द में सबसे पहले उन्होनें ज़िला राजनैतिक सम्मेलन का विशाल आयोजन कराया। जिसका उद्घाटन लोकनायक माणिक लाल वर्मा द्वारा हुआ था। शंकर देव भारती, रामबाबू शर्मा, नरेन्द्रपाल सिंह चौधरी, नन्दलाल जोशी, मास्टर किशन लाल शर्मा, देवेन्द्र कुमार कर्णावट, मोहन लाल माहेश्वरी आदि राजसमन्द प्रजामंड़ल के कर्णधार थे।

1938 में राजसमन्द में राष्ट्रीय चेतना जगाने के उद्देश्य से नवयुवक मण्डल के नाम से एक संस्था स्थापित की तथा उसके अन्तर्गत पुस्तकालय, वाचनालय तथा अन्य प्रवृतियों का संचालन किया। सन् 1940 में देवेन्द्र ने नवयुवक मण्डल के तत्वावधान में तत्कालीन योजना मंत्री गुलज़ारी लाल नन्दा ने सम्मेलन का उदघाटन किया। प्रसिद्ध विचारक शोभालाल गुप्त अध्यक्ष एवं शिक्षा सेवी गेहरीलाल नन्दवाना स्वागताध्यक्ष थे।

राजस्थान के विभिन्न जिलो से सैकड़ों कार्यकर्ता और माणिक लाल वर्मा, मोहनलाल सुखाड़िया जैसे दिग्गज व्यक्तित्व भी सम्मिलित थे। प्रमुख गांधीवादी यू.एन. ढेबर की सन्निधि इस सम्मेलन को प्राप्त थी। उनके अथक प्रयासों से लोक चेतना जन जागृति की दिशा में बड़ी ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी भावपूर्ण संरचना सम्भव हो पाई।

इसकी तत्कालीन राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष के परिप्रेक्ष्य में पूरी पूरी सार्थकता थी। उस समय मेवाड़ राज्य में भी लोक चेतना, जन जागृति तथा राजनीतिक अभ्युदय व हलचल का वातावरण निर्मित हो चुका था। सन् 1942 में 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' की महान जन क्रांति के अवसर पर महात्मा गांधी द्वारा प्रणीत 'करो या मरो' के नारे ने समूचे राष्ट्र को झकझोर कर जगा दिया था। उससे प्रेरित और प्रोत्साहित होकर श्री देवेन्द्र ने उदयपुर में आन्दोलन किया और उदयपुर के केन्द्रीय कारागार में बंदी रहे।

वरिष्ठ साहित्यकार कमर मेवाड़ी ने अपने विचार कुछ यूं रखे कि श्री देवेन्द्र कुमार कर्णावट सिर्फ एक व्यक्ति का नाम ही नहीं है, बल्कि वह एक साहित्यकार, पत्रकार, अणुव्रत प्रवक्ता, समाजसेवी, विद्वान चिन्तक, शिक्षा शास्त्री और सर्वाधिक मानवीय संवेदनाओं के मेरूदण्ड थे। उन्होंने बचपन से उम्र के लम्बे पड़ाव तक कठिनाइयों का सामना किया और संघर्षरत रहे। वे इतने प्रबुद्ध विचारक और स्पष्ट वक्ता रहे कि लोगों को कठोर और कट्टर भी प्रतीत हो सकते थे, लेकिन विचारों की यह दृढ़ता ही उनकी विशेषता रही। उनकी बोलने की अद्भुत कला, वाक्य शक्ति से अपना बनाने में माहिर थे।

अणुव्रत आन्दोलन में भी सक्रिय भूमिका रही। श्री विजय राज सुराणा ने मुखर पुरूषार्थ में लिखा कि देवेन्द्र भाई का पूरा जीवन अणुव्रत आन्दोलन से जुड़ा रहा। अणुव्रत और देवेन्द्र एक दूसरे के प्रर्याय बन चुके थे। अणुव्रत उनका जीवनव्रत बन चुका था। देवेन्द्र वर्षो तक दिल्ली में रहकर अखिल भारतीय अणुव्रत समिति की गतिविधियों को संचालित करते रहे। दिल्ली की गली गली में, स्कूलों में, व्यापारियों, बुद्धिजीवियों, पत्रकारों के बीच अणुव्रत का प्रसार किया। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य तुलसी के प्रति देवेन्द्र की श्रद्धा और निष्ठा अटूट थी। आचार्य भी देवेन्द्र की बात को बड़ी गंभीरता से सुनते। यही नहीं उन्हें बड़ा मान भी देते थे। उन्हें अणुव्रत पुरस्कार से नवाजा व एक लाख रुपए दिए, तो 21 हजार रुपए जेब से रखकर सारी राशि अणुव्रत प्रसार लिए अर्पित कर दी।

यह दिव्य दान उनको भारत के प्रेरणादायक अणुव्रत धारियों की अग्रिम पंक्ति में संस्थित करता है। यह रचनात्मक कार्यकर्ताओं के लिए एक उज्जवल उदाहरण है। देवेन्द्र की आस्था हमेशा गांधीजी में रही और उनका सपना था कि एक ऐसा शिक्षा का मंदिर बनाया जाए, जहां बच्चो को नैतिक शिक्षा व देश प्रेम का पाठ, मूल शिक्षा के साथ विद्यार्थियों को दी जाए, जिससे आजाद देश की युवा पीढ़ी को देश सेवा का महत्व समझ आए।

इसी सोच को लेकर गांधी सेवा सदन भवन का शिलान्यास 26 नवम्बर 1952 को राजस्थान के प्रमुख लोकसेवी एवं आधुनिक भामाशाह सेठ सोहनलाल दुगड़ के कर कमलो द्वारा किया गया। राजसमन्द के जिला प्रशासक जगन्नाथसिंह मेहता, नारायणचन्द्र भटनागर एवं कमललाल दशोरा इसके मुख्य प्रेरक थे। धनपतियों के सहयोग, राजस्थान सरकार और केन्द्र सरकार के सहयोग से देवेन्द्र कुमार ने कठोर परिश्रम, आर्थिक कठिनाइयों और विरोधो के बावजूद इस सपने को साकार किया। हीरालाल देवपुरा, भंवरलाल कर्णावट, सागरमल कावड़िया, भंवरलाल बड़ोला, गणेशलाल शर्मा, समर्थ जैन, कुन्दन सागर, हसन बक्श वकील, शंकरलाल कावड़िया, पूर्णचंन्द्र बड़ाला, धर्मेश जैन, चतुर कोठारी, मगन खत्री आदि प्रमुख सहयोगी थे। राजेन्द्र कुमार कावड़िया की अध्यक्षता में एक सर्वसम्मत प्रस्ताव पारित कर गांधी सेवा सदन को स्वतंत्र संस्था का स्वरूप दिया गया और देवेन्द्र कुमार कर्णावट को विधान आदि बना कर इसको विधिवत रूप देने का सर्वाधिकार दिया गया। तब से गांधी सेवा सदन राजसमन्द क्षेत्र में निरन्तर रचनात्मक एवं शिक्षात्मक संस्था के रूप में न सिर्फ संचालित हो रहा है, वरन गतिशील भी है। मुझे खुशी है मेरी पुत्री सुश्री कृतिका दीक्षित ने यहीं से शिक्षा प्राप्त की और मेरे पुत्र कार्तिक दीक्षित 12वीं कॉमर्स में आज भी अध्ययनरत है। राजसमन्द का ये शिक्षा का मंदिर ऊर्जा और प्रेरणा का स्रोत बन आज भी उसी मुकाम पर है। गांधी सेवा सदन ने देश को कई होनहार बालक तैयार कर के दिए, जिन्होंने आगे चलकर देश, दुनिया में राजसमन्द का नाम रोशन किया और कर रहे

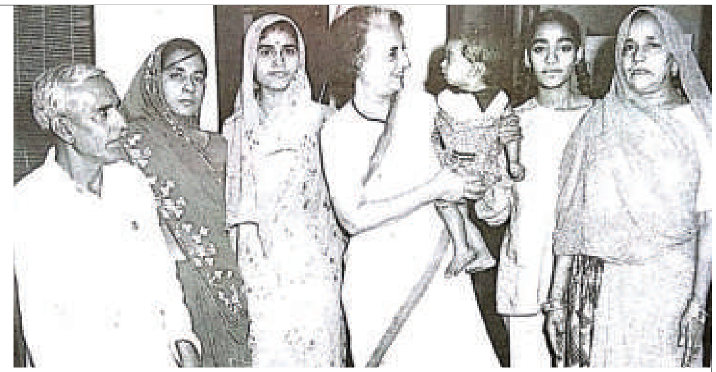

हैं। आज भी उनके पुत्र डॉ. महेन्द्र कर्णावट निरन्तर प्रगति के पथ आगे बढ़ाने का संकल्प लेकर गांधी सेवा सदन को शिक्षा के क्षेत्र में नित नया आयाम दे रहे हैं।

देवेन्द्र के व्यक्तित्व पर शिक्षाविद् और पत्रकार दिनेश श्रीमाली ने कुछ यूं विचार रखें, आज न केवल देश में बल्कि समूचे विश्व में एक अजीब तरह का भय एवं वेदना व्याप्त है। चहुंओर हिंसा और आंतक का दौर है। ऐसे वातावरण में यदा कदा कहीं रोशनी का कतरा नजर आता है, तो हम उस ओर आशान्वित होते है। इन्हीं रोशनी के कतरों में देवेन्द्र कुमार कर्णावट का नाम भी सम्मिलित किया जा सकता है। प्यार से लोग इन्हें देवेन्द्र काका कहते थे। देवेन्द्र काका इक दुबला, पतला सा दिखने वाला व्यक्ति, खादीधारी तथा सादगी से परिपूर्ण वास्तव में अपने आप में एक संस्था थे, एक आन्दोलन थे और नए मूल्यों, विचारों को जन्म की दृष्टि से एक तूफान थे। देवेन्द्र काका का समूचा जीवन चारित्रिक गिरावट के विरुद्ध रहा। मिलनसार व्यक्तित्व, सुलझे हुए विचारक, स्नेही मित्र, कलम और वाणी के धनी काका अपने आस पास के छोटे से छोटे व्यक्ति का पूरा ध्यान रखते थे। राजसमन्द संभाग में जन-जागरण के अग्रदूत थे।

डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने मुखर पुरूषार्थ में लिखा कि मेरी मां (अंजना देवी) मेरे पिता के जीवन निर्माण में पूर्ण सहयोगी बनी रही। ग्रामीण परिवेश में पली पुसी मेरी मां ने काका के विचारों के अनुरूप उनको ढ़ाला और घर को चलाया। मां ने कभी भारी साड़ी और गहनों की मांग नहीं की। जैसा था उसी में संतोष कर आगे बढ़ी। अभावों को काका के सामने ना झलकने देना एवं आगंतुको को ममत्व भरा आतिथ्य देना मेरी मां की विलक्षण विशेषता रही। जिसके आधार पर ही मेरे पिता सार्वजनिक जीवन की लम्बी उड़ान भर सके। मेरे पिता कर्णावट परिवार की पहचान रहे। प्रेरणा पुंज पिता के आदर्शों पर बड़े भाई गुणसागर कर्णावट और मैंने राजनैतिक और सामाजिक क्षेत्र में आगे कदम बढ़ाया। निराशा के क्षणों में भी हमने काका से सदैव नई शक्ति प्राप्त की। देवेन्द्र काका का अपनत्व हम परिजनों के लिए अमूल्य निधि है। जिस समर्पण भाव से काका ने समाज की सेवा की। उस पर हमें गर्व है। राजसमन्द की माटी ने ऐसे सपूतो को जन्म दिया। जिन्होंने देश दुनिया को नैतिक मूल्यों का बेमिसाल तोहफा दिया है।

देवेन्द्र काका का व्यक्तित्व मुखर पुरूषार्थ का कृतित्व है। 7 सितम्बर 2007 को भरा पूरा परिवार छोड़ अहिंसा और अणुव्रत का ये पुजारी दुनिया में अपना एक इतिहास लिखकर इस मृत्यु लोक से विदा लेकर ईश्वर चरणों में निवास कर गए। आपके विराट व्यक्तित्व को **माटी का लाल कॉलम** में लिखने का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ। कर्णावट परिवार और गांधी सेवा सदन संस्था परिवार ने महान विभूति के जीवन का परिचय उपलब्ध करवाया। इसके लिए मैं आभार प्रकट करते हुए अणुव्रत के पुजारी समाजसेवी और स्वतंत्रता सैनानी श्री देवेन्द्र कर्णावट को कोटि कोटि नमन करता हूं।

प्रस्तुति
सूर्य प्रकाश दीक्षित
काव्य गोष्ठी मंच कांकरोली
मो. 9414621730

तासोल गांव था कभी ताम्बावती नगरी, यहीं झील में समाहित होती है गोमती

तासोल ग्राम यात्रा : आयड़ सभ्यता से है रिश्ता, मिले थे कई अवशेष

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

राजसमंद झील के उत्तर दिशा में बसा तासोल गांव जिला मुख्यालय राजसमंद से मात्र 12 किमी दूरी पर स्थित है। तासोल के उत्तर में खटामला, पूर्व में मादड़ा-वणाई, दक्षिण में भाणा-भगवान्दा और पश्चिम दिशा में पसूंद गांव स्थित है। गांव के बुजुर्ग रतनलाल बताते हैं कि आयड़ की प्राचीन सभ्यता में के भग्नावेश पूर्व में तासोल में भी मिले हैं, जो आज भी आयड़ संग्रहालय में सुरक्षित है। जन श्रुति है कि पूर्व में इस गांव को ताम्बावती के नाम से जाना जाता था। गांव के एक अन्य बुजुर्ग नारायण पालीवाल ने बताया कि संवत् 2017 में आचार्य तुलसी जब तासोल आये थे। तब सभी ने इस गांव का नाम तुलसी ग्राम रखने का निर्णय लिया। कुछ दिन इस नाम से भी जाना जाता रहा, लेकिन पुन: तासोल नाम ही प्रचलित हो गया। बताते है कि आजादी से पहले तक आधा गांव में चारण ठिकाना और आधा गांव पालीवाल ब्राह्मणों को राजा द्वारा कर माफी में दे रखा था। पालीवाल भाई-बंधुओं में एक बार किसी बात को लेकर आपस में लड़ाई हो गई, तो कर माफी का ताम्ब्रपत्र गढ़बोर स्थित चारभुजानाथ मंदिर में भेंट कर दिया। तब से पालीवाल अपनी भूमि लगान चारभुजा मंदिर में जमा कराते रहे। आजादी के बाद पेमाइश हुई तो सरकार के पास लगान जमा होने लगा।

तासोल गांव की आबादी : करीब 3619
मतदाता : करीब 2400
राजस्व गांव : तासोल, छापरखेड़ी, पर्वतखेड़ी व मंडावर

बदल गई ग्रामीणों की आजीविका

गोमती नदी किनारे पर बसे तासोल में सभी ग्रामवासी कृषि पर ही आश्रित थे और यहां की जमीन काफी उपजाऊ थी। समय ने करवट ली, तो राजसमंद में सफेद सोने के रूप में मार्बल उत्पादन होने लगा और जिला मुख्यालय के पास व समतल क्षेत्र होने से तासोल व आस पास में मार्बल कटर, गैंगसा युनिट, गोदाम लगने लगे। इसके साथ ही गांव की आजीविका के स्त्रोत भी बदल गए। सड़क किनारे जिन खेतों में कभी खेती होती थी, वहां धीरे धीरे मार्बल फैक्ट्रियां व कटर लग गए। साथ ही मार्बल अपशिष्ट डालने की वजह से क्षेत्र की उपजाऊ जमीन धीरे धीरे अनुपजाऊ बनती गई और गोमती नदी से रेती का अत्यधिक दोहन होने से भूजल स्तर में भी काफी गिर गया। इस कारण खेती करना दुभर होने लगा। अब ज्यादातर लोग मार्बल फैक्ट्री में कार्यरत है, तो कुछ अहमदाबाद व मुंबई में भी व्यवसायी या नौकरी के चलते प्रवासरत है।

सांसद का आदर्श गांव तासोल

राजसमंद सांसद हरिओमसिंह राठौड़ ने तासोल ग्राम पंचायत को अपना सांसद आदर्श गांव चुना और इसके समग्र विकास की योजना बनाई। सांसद ने तासोल की सरपंच अनुराधा वैष्णव के साथ मिलकर घर घर तक सीसी रोड, कचरा निस्तारण की समुचित व्यवस्था, पेयजल प्रबंध किया। पर्वतखेड़ी और तासोल में नर्सरी विकसित की जा रही है।

गांव की प्रमुख जातियां

ब्राह्मण, कुमावत, वैष्णव, सुथार, मुस्लिम, कुम्हार, लौहार, गमेती, कीर, खरवड़, चदाणा, गायरी, रावत।

ये है आवश्यकताएं

गांव में उप स्वास्थ्य केंद्र है, मगर चिकित्सक नहीं। आयुर्वेद औषधालय व ग्राम सेवा सहकारी समिति है, मगर राष्ट्रीयकृत बैंक की कमी खलती है। राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के लिए उपयुक्त भवन की भी जरूरत है। गोमती नदी के किनारे काफी लोगों ने अतिक्रमण कर दिया है, जिसे हटाने की दरकार है।

ऐतिहासिक स्थल :

मालरा भैरूजी मंदिर क्षेत्र का ऐतिहासिक स्थल है, जहां प्रतिवर्ष मेला रहा है। इसी तरह बाबाजी की मंडी मंडावर, अम्बा माताजी का मंदिर, रेटा का बरगद है। रेटा का बरगद नामक स्थल को रेटा का बड़ला भी कहते हैं, जहां करीब 500 वर्ष पहले पांच कुओं पर एक साथ पांच रहट चलते थे। बरगद के पेड़ की शाखाओं पर बच्चों के खेलने का प्रमुख स्थान था, जहां ग्रामीणों का भी जमघट लगा रहता था। अब बरगद एक चौथाई हिस्से में ही रह गया है, मगर यादें अब भी ग्रामीणों के जेहन में है।

बेटी ने ली साध्वी की दीक्षा

तासोल में जैन समाज रंगलाल बोहरा की बेटी पुष्पा ने सांसारिक जीवन त्याग कर साध्वी की दीक्षा ले ली। अब साध्वी प्रज्ञाश्री के रूप में देशभर में लोगों को सत्य, अहिंसा का पाठ पढ़ा रही है। आचार्य महाश्रमण की प्रमुख शिष्याओं में एक है।

गौरवमय युवा, व्यवसायी, भामाशाह

गांव में पिछड़े वर्ग के उत्थान, जनकल्याणकारी योजनाओं के प्रचार प्रसार, जनजाग्रति से लेकर गांव में विकास में सहभागिता निभाने तक में युवा, व्यवसायी और भामाशाह भी कम नहीं है। महेंद्र बोहरा व सुन्दर लौहार सफल व्यवसायी व भामाशाह है, जो न सिर्फ गांव विकास सहभागी बनते हैं, बल्कि धार्मिक स्थलों के विकास में भी अहम भूमिका है। गुलाब सालवी नेहरू युवा केंद्र के युवा कार्यकर्ता के तौर पर राष्ट्रपति के हाथों से सम्मानित हो चुके हैं। इसी तरह गौरूशंकर हॉकी के राष्ट्रीय खिलाड़ी है, तो लता प्रजापति जूड़ो में राष्ट्रीय खिलाड़ी है। रतनलाल पालीवाल पूर्व उप जिला शिक्षा अधिकारी पद से सेवानिवृत हुए। उद्योगपति देवीलाल कलाल व सुरेश बोहरा ने भी गांव गौरवान्वित किया। गायत्री परिवार युवा प्रकोष्ठ प्रभारी मुकेश जोशी व गायत्री चेतना केंद्र संचालक मुकेश जोशी, महादेव युवा मंडल के गुलाब सालवी की जनजाग्रति में अहम भूमिका है।

राजप्रशस्ति में छापरखेड़ी गांव का जिक्र

ग्राम पंचायत तासोल में तासोल के अलावा पर्वतखेड़ी, मंडावर, व छापरखेड़ी के नाम से तीन अन्य राजस्व गांव है। छापरखेड़ी के नाम का उल्लेख राजसमन्द झील पर स्थित सबसे बड़े शिलालेख राजप्रशस्ति में छापर खण्डिका के नाम से अंकित हैं। यही के निवासी सेवानिवृत्त उप जिला शिक्षा अधिकारी रतनलाल बताते हैं कि संवत् 1644 तक यहां खारोल जाति के लोग रहते थे, जिन्हें राजा द्वारा अन्यत्र भेजकर यह ग्राम पालीवाल व्यास परिवार को कर माफी में दिया गया। अभी एक व्यास परिवार यही है और अन्य सभी व्यास परिवार उदयपुर में निवास करते हैं।

अब नर्सरी दिलाएगी पहचान

तासोल में 450 बीघा जमीन को अतिक्रमा मुक्त कर ग्राम पंचायत द्वारा फलदार, छायादार पौधे लगाए गए। नियमित सिंचाई के लिए ट्यूबवैल खुदवाए हैं, जिससे भविष्य में न सिर्फ ग्राम पंचायत तासोल आर्थिक रूप से सशक्त बनेगी, बल्कि ग्रामीणों को भी रोजगार दिलाएगी।

हर गांव में सड़कें, पेयजल प्रबंध

ग्राम पंचायत द्वारा चारों गांवों के हर गली मोहल्ले में सीसी सड़कों का निर्माण करवाया है और गन्दगी निस्तारण के लिए नालियां बनाई गई है। हर गांव में सुविधायुक्त श्मशान घाट बनाए हैं और सभी गांवों में पेयजल के लिए ट्यूबवैल खुदवाकर जलापूर्ति की जा रही है। तासोल व पर्वतखेड़ी में रोड लाइटें भी लगाई है, जिससे रात के वक्त ग्रामीणों के लिए राहतभरा है। युवा सरपंच अनुराधा वैष्णव के प्रयासों से करीब चार वर्षों में तासोल गांव की तस्वीर ही बदल गई।

पूर्व शिक्षाधिकारी ने लिखे उपन्यास

पूर्व उप जिला शिक्षा अधिकारी रतनलाल पालीवाल ने वर्ष 1963 में स्वतंत्रता की प्यास उपन्यास लिखा। इसी तरह वर्ष 2003 में श्मशान में सुहागरात नामक उपन्यास काफी प्रसिद्ध रहा। उलाहना लघु काव्य भी चर्चित रहा, जबकि अंग्रेजी ग्रामर की पुस्तक वे टू सक्सेज लिखी है।

10 हजार युवाओं को बनाया डिजिटल साक्षर

तासोल ग्राम पंचायत अंतर्गत छापरखेड़ी के ऊर्जावान युवा धीरज कुमार पालीवाल का पूरे जिले में कम्प्यूटर शिक्षा, सूचना व प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अपना वर्चस्व है। इनके द्वारा 10 हजार से ज्यादा युवाओं को ई साक्षर बनाया और स्वरोजगार दिलाने के लिए राज्य व केन्द्र की स्कील डवलपमेंट इनके द्वारा ही चलाया जा रहा है। कम्प्यूटर के क्षेत्र में कांकरोली के शास्त्री मार्केट में गत 12 वर्षों से शाईन कम्प्यूटर का सफलतापूर्वक संचालन किया जा रहा है।

तासोल गांव की हेल्पलाइन

नाम	पद	मोबाइल
अनुराधा वैष्णव	सरपंच	8003257552
करणसिंह राव	ग्राम विकास अधिकारी	9530308847
रामदास वैष्णव	उपसरपंच	8003257552
पंकज पालीवाल	पटवारी	9829326076
सुनिता बानिया	प्रधानाचार्य रा.उ.मा.वि.	9636228179
रमेशचंद्र राणा	व्याख्याता रा.उ.मा.वि.	7023930899
हीरालाल पूर्बिया	सहायक सचिव	9950849204
हेमलता जोशी	प्रेरक	9636678985
मुकेश जोशी	पंचायत सहायक	9783622177
अशोक कुमार दाधीच	पंचायत सहायक	9413705128
रेखा भाण्ड	पंचायत सहायक	7742132553
कमला पालीवाल	पंचायत सहायक	9680035425
कन्हैयालाल डामोर	पशुधन सहायक, तासोल	9829847407
धूलचन्द सेन	अध्यक्ष जीएसएस तासोल	9414575568
लहरीलाल कुमावत	व्यवस्थापक जीएसएस तासोल	9929728041
उदयराम गुर्जर	लाइनमैन (बिजली विभाग)	9799777828
प्रवीण	विद्युत विभाग	8005561610
राधेश्याम कुमावत	पोस्टमैन	9887169279
जगदीचंद्र खटीक	कृषि पर्यवेक्षक, तासोल	9929084902
देवीलाल सुथार	जल वितरण	9660634345
कुलदीप राव	बैंक बिसी	8949694310
ललित पालीवाल	ई-मित्र	9511507361
उदयलाल बंशीवाल	बीट कांस्टेबल, केलवा	9680349151
गुलाब सालवी	सामाजिक कार्यकर्ता	8209778194
धीरज पालीवाल	सामाजिक कार्यकर्ता	9829445469
जानकी बाई	आंगनवाड़ी कार्यकर्ता तासोल	9680796484
कैशल्या पालीवाल	आंगनवाड़ी कार्यकर्ता पर्वतखेड़ी	9929569042
श्यामादेवी पालीवाल	आंगनवाड़ी कार्यकर्ता मंडावर	9166448108
गुड्डी कुमावत	आंगनवाड़ी कार्यकर्ता छापरखेड़ी	9660087224
भगवती पालीवाल	आशा सहयोगिनी मंडावर	8058664305
पुष्पा पालीवाल	आशा सहयोगिनी पर्वतखेड़ी	9950300318
लक्ष्मी पालीवाल	आशा सहयोगिनी तासोल	9950481198
हेमलता पालीवाल	आशा सहयोगिनी छापरखेड़ी	

तासोल में मालरा भैरूजी मंदिर।

गायत्री चेतना केन्द्र छापरखेड़ी

अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज, हरिद्वार द्वारा पंजीकृत व गायत्री परिवार ट्रस्ट राजसमंद के आदर्श ग्राम योजना में चयनित गांव छापरखेड़ी में गत 15 वर्षों से गायत्री परिवार के सप्तक्रांति आन्दोलन अन्तर्गत कई रचनात्मक सेवा कार्य किए गए हैं, जिनमें निम्न प्रमुख है-

1. **पर्यावरण संरक्षण :** मार्ग के दोनों तरफ वृक्षारोपण कराया गया। वर्तमान में श्मशान भूमि पर युवा साथियों द्वारा 150 पौधे रोपकरण उनका संरक्षण किया जा रहा है। युवाओं ने बीस हजार रुपए अंशदान से जुटाए तथा सभी कार्यकर्ता साप्ताहिक श्रमदान कर आदर्श मुक्तिधाम के लिए प्रयासरत है।
2. **योग व स्वास्थ्य :** चेतना केंद्र समय समय पर शक्तिपीठ के माध्यम से योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन करवाता है। इससे योग व प्राकृतिक चिकित्सा के प्रति वातावरण बनाया जा सके।
3. **व्यसन मुक्ति :** गांव में दुर्व्यसनों से होने वाले नुकसान के प्रति लोगों को जागरुक करने के लिए साहित्य वितरण, दीवार पर नारा लेखन, प्रोजेक्टर पर प्रदर्शन कर लोगों को जागरुक किया जा रहा है।
4. **आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक क्रांति :** यज्ञ संस्कार का आयोजन किया जाता है, जिसमें सभी लोग समान रूप से सद् संस्कारों व युवा साथी आदर्श समाज के निर्माण के लिए प्रज्ञा वाचनालय का संचालन करते हैं। आमजनों को निःशुल्क सद्साहित्य का वितरण कर जनमानस में भारतीय संस्कृति के सूत्रों का आरोपण करता है।

यह समस्त कार्य गायत्री परिवार के कार्यकर्ता अपने समयदान, अंशदान से करते हैं तथा समयदान कर स्वच्छता, पर्यावरण आदि कार्य करते हैं। केन्द्र अपने रचनात्मक गतिविधियों के सम्यक् संचालन के लिए व गायत्री परिवार के संस्थापक पं. श्रीराम शर्मा आचार्य स्मृति उपवन व एक्युप्रेशर गार्डन का विकास करना चाहता है। इसके लिए स्थान व जगह आवंटित करने का अनुरोध करता है।

जन कल्याण में अग्रणी महादेव नवयुवक मंडल

महादेव नवयुवक मंडल तासोल व नेहरू युवा केंद्र की ओर से तासोल पंचायत व आस पास के क्षेत्र में जरूरतमंद विद्यार्थियों को निःशुल्क पोशाक, सहायक पाठ्यसामग्री, स्वेटर आदि वितरण किए जाते हैं। साथ ही विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताएं, पर्यावरण स्वच्छता अभियान, मतदान जागरुकता व सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध अभियान इस संगठन द्वारा चलाया जाता है। मेधावी छात्रों को प्रोत्साहन व सामाजिक कल्याण की योजनाओं से लोगों को लाभान्वित करने और जनजागृति के लिए भी कार्य किए जा रहे हैं। मंडल अध्यक्ष गुलाब सालवी, सचिव हीरालाल पूर्बिया, कोषाध्यक्ष कन्हैयालाल पूर्बिया सहित 30 ऊर्जावान युवा संगठन से जुड़े हुए हैं।

मान्यता प्राप्त ज्ञान केन्द्र

RS-CIT

प्रवेश प्रारम्भ

करें और नौकरी की दौड़ में सबसे आगे रहें।

सरकारी नौकरी पाने का सुनहरा अवसर

RS-CIT
The Real Need of Today

RKCL
IT shapes future
(Rajasthan Knowledge Corporation Limited)

● राज्य सरकार द्वारा अनुमोदित कम्प्यूटर कोर्स ● मध्यम : हिन्दी एवं अंग्रेजी ● RS-CIT से जुड़कर सीखें INTERNET, MS WORD,EXCEL, POWER POINT
● RS-CIT में प्रवेश लेकर आप सीख सकते हैं इंटरनेट के व्यावहारिक ज्ञान, जिससे आपके होंगे काम आसान

क्षेत्र का सबसे बड़ा, सबसे बेहतर और राष्ट्रीय व जिला स्तर पर सम्मानित फेकल्टी वाला संस्थान

आदर्श कम्प्यूटर
होलीथड़ा, तासोल, जिला-राजसमंद
मो. 988752509, 8529621377

LOHIYA
COMPUTER CENTER
शारदा हॉस्टल बिल्डिंग, छतरियों के पीछे, हस्तीनापुर,
कांकरोली-राजसमंद मो. 9887525095, 9462191802

रंगों का पर्व होली की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

We Deal in imported Marble Gangsaw Segments & Gangsaw Blades

Saurabh Siroya
9929099251

Jagdish Paliwal
9799311111

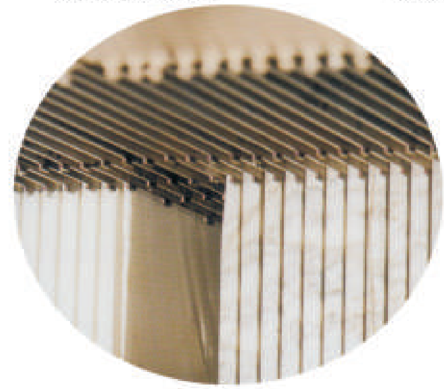

VS INDUSTRIES
Plot No. 60, Sapetia Road,
Sukher, Udaipur (Raj) 313001
Email : mail.vsindustries@gmail.com

Divine Assistance
Near Bus Stand, Ritesh Complex, Rajsamand
313326 (Raj.) Mob. 9799311111, 9413319852
Email : divineexports2@gmail.com
jagdish_paliwal@ymail.com

बिच्छूवाद

एक जगह भव्य पांडाल में श्रीमद् भागवत कथा चल रही थी। दिव्य मंचासीन पंडितजी आलौकिक ज्ञानामृत कलश भक्तों पर उड़ेल रहे थे। वे अपने कथन की ओरिजनलिटी के प्रूफ के लिए एक छोटी सी कथा सुनाने लगे कि भक्तों! एक भगवा भेषधारी सज्जन नदी में अंग प्रक्षालन की क्रिया संपन्न कर रहे थे। अकस्मात् उनकी दृष्टि अबाध सलिला तरंगों से संघर्ष करते हुए एक लघु कीट की ओर गई। सज्जन में सज्जनता स्फुरित हुई और उन्होंने अपनी हथेली पर उस आक्रांत जीव को शरण दे दी। कुछ क्षण तक तो वह कीट शांत पड़ा रहा था और जब वह आश्वस्त हो गया कि अब किसी भी प्रकार भय नहीं है, तो उसमें निज गुण जागरण हुआ और सज्जन महोदय के उपकारों को ताक पर रखकर उसके हाथ को काट खाया। वे सज्जन दर्द से बिलबिला उठे।

महोदयजी का संतुलन डगमगाया और वह तुच्छ कीट फिर से धराशायी होकर छटपटाने लगा। उन महाशय की पीड़ा किंचित कम हुई तो उन्होंने विषजंतु को तड़पता देखा और पुन: दूसरे हाथ में ले लिया। संत लक्षण प्रकरण में बाबा तुलसीदास जी कहते हैं– 'संत हृदय नवनीत समाना' अर्थात् संतों का हृदय ताजे माखन की तरह होता है, जो थोड़ा सा ताप पाकर तरल हो जाता है। दुर्जन संत के पिघलने को अपनी दुर्जनता की सफलता या सज्जन की मूर्खता मान लेते हैं। उस कृतघ्न कीट ने सज्जन को तब तक काटना नहीं छोड़ा, जब तक उन्होंने उसे निकालकर फेंक नहीं दिया।

किनारे पर खड़े तमाशबीनों ने पूछा कि बाबा जी आप इस जीव को अपने को हानि पहुंचाकर बचाने में क्यों लगे थे? जितना आपने उसकी सुरक्षा में समय और श्रम का अपव्यय किया है। यदि उसका आधा भी गाय जैसे अहिंसक प्राणियों के उत्थान में लगाते, तो उनकी दीनता समाप्ति हो जाती और समाज को विषैले जंतुओं से मुक्ति मिल भी जाती। सज्जन जहरीली पीड़ा में भी मुस्कुरा कर बोले– आप लोग संकुचित तथा दूर दृष्टि दोष ग्रसित हो। इसलिए ऐसे मूर्खतापूर्ण प्रश्न कर रहे हो। संकीर्णता के घेरे से बाहर निकलकर देखोगे, तो मेरी महानता के दर्शन कर पाओगे। लोगों की आंखें चौड़ी होकर कानों को छू लीं।

महात्मा जी निरंतर बोल रहे थे– इसको बचाने के दो कारण हैं, पहला सर्व जीव समभाव एवं सुरक्षा करना मेरा संकल्प है और विषाक्त करना इसकी प्रकृति है। दोनों अपनी आदतों से विवश हैं। दूसरा कारण शायद आपकी अदूरदर्शी दृष्टि नहीं देख पाएं। भीड़तंत्र प्रधान समाज में कोई भी प्राणी तुच्छ या अनुपयोगी नहीं है। क्योंकि पता नहीं कल कौनसा जीव मुझे मठाधीश के सिंहासन तक पहुंचने में सहायक सिद्ध हो। इसलिए मैंने किसी की सुरक्षा में कोताही नहीं बरती है। यह तो लघु कीट है। मैंने तो अपनी आस्तीनों में भयंकर फुंफकारने वाले को भी शरण दे रखी है। पंडित जी इस दृष्टांत के माध्यम से बताना चाह रहे थे कि परोपकार अच्छे या बुरे को ध्यान में रख कर करना बिल्कुल गलत है।

यह कथा आप लोगों ने जरूरी सुनी होगी, तो कुछ चेंज नहीं लगी? यदि लगी तो आप धार्मिक और जागरूक पाठक है। अन्यथा अखबारी पाठक जो सुबह की संवेदनशील घटना को दिमाग हैंग होने के डर से शाम तक भूल जाते हैं।

यह दृष्टान्त आधुनिक भारतीय समाज पर एकदम फिट बैठता है। क्योंकि कुछ नमक हराम देश के संसाधनों का भरपूर इस्तेमाल करते हैं। पूरी सुरक्षा भी दी गई है, लेकिन जब भी दांव पाते हैं, तो डंक मारने में रहम नहीं करते हैं। जिस पत्तल में खाते हैं, उसमें छेद करने से नहीं चूकते हैं। जब भारत मां अपने बहादुर सपूतों के क्षत विक्षत शवों को देखकर चित्कार करती है, तो इनको सुखानुभूति होती है। लचीले कानून और संवैधानिक आजादी की ओट का अनुचित लाभ लेकर मनमाना राग आलापते हैं। इनके कुकृत्य को राजनीतिक भाषा में अलगाववाद कहा जाता है, लेकिन वास्तव में देखा जाए, तो शीर्षक इनके कार्यों का प्रतिबिंब है। लोकतांत्रिक नदी के हाशिये पर खड़ी जनता ने गुहार लगाई, तो इनके सुरक्षा बंधनों में थोड़ी सी ढील दी गई, तो इनके तेवर की पतंग जमीन चूमने लगी और अगर बिल्कुल केयर न किया जाए, तो पूरी हेकड़ी छूमंतर हो जाएगी और शेर से सियार बन जाएंगे।

पीयूष कुमार द्विवेदी 'पूतू'
सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग
जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय
चित्रकूट उत्तरप्रदेश 86041-12963

हम सब हैं झूठे और झांसेबाज

इस सत्य को हममें से कोई भी स्वीकार नहीं करेगा कि हम झूठे हैं। उंगलियो पर गिनने लायक लोग ऐसे हो सकते हैं, जो कि सतयुग की बजाय जाने किस दुर्भाग्य और किसकी गलती से कलियुग में पैदा हो चुके हैं, वरना हम सभी उस श्रेणी में आते हैं, जो कि झूठ सुनने और बोलने में माहिर हैं। बावजूद इसके कभी कोई हमें झूठा कह दे, तो हम हाथ धोकर पीछे पड़ जाते हैं। प्रतिकार की मुद्रा में आ जाते हैं और प्रतिशोध की चरम अवस्था तक पहुंच कर संबंध तोड़ देने तक को आमादा हो जाते हैं।

झूठ को स्वीकार करना कोई नहीं चाहता। क्योंकि हम जो कुछ झूठ बोलने के आदी हो चुके हैं। वह हमारी रोजमर्रा की जीवनशैली का हिस्सा हो गया है। इसलिए हमें अपने द्वारा कही गई और दूसरो के मुंह से सुनी गई झूठी बातें भी झूठ प्रतीत नहीं होती। इसका मूल कारण यह है कि झूठ को हम सहज स्वीकार्यता दे चुके हैं और यह मान लिया है कि इतना झूठ बोलना तो चलता है। इसे झूठ में शामिल नहीं किया जा सकता। क्योंकि सभी लोग तो ऐसा ही कर रहे हैं। फिर हम कहां कहां बचे रहे। असल बात यह है कि हम इंसानों के लिए अपने स्वार्थ और ऐषणाओं की पूर्ति, आरामतलबी और भोग विलास भरी जिन्दगी पाना ही मूल उद्देश्य रह गया है। इसलिए हम बहुसंख्य लोग उस झूठ को झूठ नहीं मानकर लोकाचार और लोक व्यवहार का अंग बना चुके हैं, जो कि हमारे स्वार्थ पूरे करता है। हमें कहीं न कहीं वैध अवैध लाभ देता है।

अब हमारी जिन्दगी शुचिता भरी रही ही नहीं। हम सभी अपने हक में सब कुछ भुनाना चाहते हैं और इस तरह जिन जिन लोगों से हमारे संबंध हैं। वे भी सारे के सारे हमारी ही तरह हैं। इसलिए कौन झूठ को झूठ के रूप में स्वीकारें। झूठ कलियुगी इंसानों के लिए वह हथियार है, जो कि हमेशा असरकारी भूमिका में रहता है। झूठ के अंधकार में वह सब कुछ जायज है, जो किया जा सकता है। आमतौर पर हमसे कोई पूछे तो हम कभी स्वीकार नहीं करते कि हम झूठ बोलने के आदी हैं। भले ही सवेरे जगने से लेकर रात को सोने तक हम खूब सारे झूठ का प्रयोग क्यों न करते रहें। जो झूठ सर्वमान्य और सर्वस्वीकार्य हो चुका हो। उसे भला कौन झूठ के रूप में स्वीकार करेगा ? हम सभी लोग इसी बात को लेकर चिन्तित और दु:खी रहा करते हैं कि भगवान हमारी नहीं सुनता। लोग हमारी बातों पर ध्यान नहीं देते, हमेशा असफलता हाथ लगती है।

लेकिन इसके पीछे के रहस्य को कोई समझना नहीं चाहता। जो लोग झूठ पर झूठ बोलते चले जाते हैं। उनकी वाणी कभी सत्य हो ही नहीं सकती और यही कारण है कि हमारा कहा या सोचा हुआ कभी होता ही नहीं। सत्य से परे जाकर झूठ का आश्रय लेकर हम जो भी संकल्प लेंगे। उनमें सत्य की सकारात्मक ऊर्जा रहेगी ही नहीं, बल्कि झूठ का नकारात्मक आभामण्डल लेकर जो भी शब्द या वाक्य बाहर जाएगा, वह अपने आप दमहीन होकर निष्प्रभावी हो जाएगा और इसका कोई प्रभाव सामने नहीं आ पाएगा।

फिर हमारे द्वारा बोले और सुने जाते रहने वाले झूठ के कारण हमारी वाणी कभी फल नहीं देती। क्योंकि वह है ही पूरी तरह मिथ्या। जब हमारी आदत में ही झूठ शुमार हो चुका है, तब भगवान भी नहीं सुनता। क्योंकि हमारी छवि उसके दरबार में ऐसे लोगों की श्रेणी में शामिल होती है, जो आदतन झूठे हैं और इसलिए झूठे लोगों की कोई भी मांग या इच्छा पूरी नहीं की जा सकती।

अधिकांश लोग आवश्यकता पड़ने पर दो मिनट पांच मिनट में आने या गंतव्य की ओर जाने की बात कहते नहीं थकते, जबकि इन्हें पता होता है कि इतने कम समय में यह संभव नहीं हो पाएगा। पर हमारी आदत पड़ गई है क्या करें। कई बार हम अपने मुंह से ऐसे ऐसे झूठ और नकारात्मक इच्छाओं का प्रस्फुटन करते रहते हैं और भगवान यदि हमारी प्रार्थनाओं को सुनकर हमारी वाणी को सफल करता रहे, तो दुनिया बरबाद ही हो जाए। क्योंकि हम अपनी पूरी जिन्दगी में अपनी भलाई की कम तथा दूसरों के नुकसान के बारे में अधिक सोचते हैं और इससे भी आगे बढ़कर औरों की क्षति को देखकर हमें भीतर तक प्रसन्नता का अनुभव होकर अवर्णनीय सुकून का अहसास भी होता है।

अपने वादों से मुकरना, किसी को जुबां देकर मुकरना, किसी भी काम के होने या कर देने के बारे में झांसे देते रहना और काम नहीं कर औरों को आज- कल और परसों पर टालते रहना, सच्ची बात नहीं बताकर गुमराह करते चले जाना और दूसरों को भ्रमित करते हुए अपने स्वार्थ पूरे करना तथा उल्लू और उल्लू के पट्ठों को सीधे करने के उपक्रम में रमे रहना भी पक्के तौर पर ऐसा झूठ है, जिसका पाप सभी झूठों और झांसेबाजों को भुगतना ही पड़ता है। चाहे वे कितने ही बड़े ओहदेधारी, वैभवशाली, महान बाबाजी और लोकप्रिय हस्ती ही क्यों न हों। इन झांसेबाजों को यह पता नहीं है कि वे जिस तरह झूठ पर झूठ बोलकर भरमाते रहे हैं। उसका पाप उन्हें अधिक भोगना पड़ेगा। क्योंकि यह सब वे जानते- बूझते हुए चतुराई, धूर्तता और स्वार्थ में डूबे रहकर ही किया करते हैं। आजकल सर्वत्र झूठों और झांसेबाजों का ही तिलस्म सभी जगह दिखता है।

क्यों न हम अपने सम्पर्क में आने वाले लोगों को सही सही बता दें कि उनके काम का हश्र क्या होना है। काम होना भी है या नहीं होना है। किसी को लटकाए रखना, भ्रमित करते हुए उसका शोषण करते रहना, उल्लू बनाना, अपने आगे- पीछे चक्कर कटवाना आदि सब उन पापों की श्रेणी में शामिल हैं, जिनका कोई प्रायश्चित या परिहार नहीं है।

इन पापों के क्रूरतम दण्ड को एक जन्म में पूरा भोग लेना संभव नहीं है। इसके लिए हमें कई जन्म लेने पड़ेंगे। इस सत्य को कोई समझना नहीं चाहता। झूठों और झांसेबाजों के भीतर से धर्म, सत्य और चक्रीय ऊर्जा बाहर पलायन कर जाती है और तब ये झूठे लोग जिन्दगी भर खोखले बने रहते हैं।

यही कारण है कि इन झूठों और झांसेबाजों को बाद में कठपुतली या बिजूकों की तरह जिन्दगी गुजारनी पड़ती है। लोग इनका मनमाना इस्तेमाल करते हैं और दुनिया इन पर हंसती भी है। इन पर रोना भी आता है और इनके लिए बददुआओं की बारिश भी होती रहती है। फिर हर झूठे का अंत कैसा होगा। इस बारे में आसानी से समझा जा सकता है। आज की दुनिया इन्हीं झूठों और झांसेबाजों से परेशान है। फिर ऐसे लोगों के लिए दुनिया का कोई सा कुकर्म बुरा नहीं रह जाता। क्योंकि झूठ अपने साथ सारे अवगुण लेकर आता है। सभी अवगुणियों, चोर-डकैतों, लूटेरों, रिश्वतखोरों, भ्रष्टाचारियों और लोगों को उल्लू बनाने वालों के चरित्र की परख की जाए, तो यही सामने आता है कि उनका पूरा तिलस्म और कारोबार झूठ की बुनियाद पर ही टिका हुआ है।

ये झूठ और झांसे इहलोक और परलोक सब बिगाड़ने वाले हैं

अपने स्वार्थ को लेकर झूठ पर झूठ बोलते रहने की आदत यों ही बनी रही तो पूरी की पूरी जिन्दगी ही झूठ का पर्याय हो जाएगी। इसी तरह औरों की सदाशयता, सहिष्णुता और सहनशीलता का निरादर कर अथवा लालच- प्रलोभन या दबाव देकर अथवा उनके काम कर देने अथवा करा देने के रोजाना की तरह झांसा देने की प्रवृत्ति जारी रही, लोगों को भरमाने की आदत बनी रही, तो निश्चित मान कर चलना होगा कि हमारे भीतर से इंसानियत समाप्त हो चुकी है और हम खोखली कठपुतलियों- कठपुतलों और बिजूकों की तरह ही हो गए हैं। आत्म निर्णय की क्षमता खो चुके लोग ताजिन्दगी पराश्रित और पिछलग्गू होकर ही जीते हैं। वे किसी के काम नहीं आ सकते। यहां तक कि अपने कर्तव्य, अधिकार और स्वाभिमान को भी कहीं न कहीं गिरवी रखते रहते हैं। झूठ बोलने- सुनने और झांसेबाजी में रमे हुए लोगों की सौ जन्मों में भी गति मुक्ति नहीं हो सकती। ये सारे के सारे भूत- प्रेत और चुडैल के रूप में उन बाड़ों और गलियारों में भटकते- लटकते और मटकते नजर आते हैं, जिनमें उनका अधिकांश समय झूठ और झांसों की वृष्टि करता रहा है। इन दक्षिणमुखी को चुके लोगों के लिए कोई सी उत्तर क्रिया काम नहीं आती। बल्कि इनके पितर भी इन झूठों, धूर्तों, मक्कारों और झांसेबाजों से सायास दूरी बनाए रखते हैं।

दीपक आचार्य
उप निदेशक
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग राजसमंद
Drdeepakacharya.com

RAJBIL26868/2016/1284525
सामाजिक अभिरूचि का प्रयाय
जयवर्द्धन
मासिक पत्रिका
Web : liverajsamand.com

LIVE NEWS
समसायिक, चर्चित घटना- दुर्घटना के लाइव वीडियो और समाचार

भक्ति से पहले सरलता जरूरी

परमात्मा भक्तों के भाव के भूखे है, न कि उनकी सुख सुविधा व छप्पन भोग और पूजा पाठ के। प्रभु सदैव सरल स्वभाव वाले भक्तों के हृदय में वास करते है और उनके सदैव साथ रहते हैं।

एक समय की बात है, एक गांव में एक आनंद नामक आलसी व्यक्ति रहता था। वह कोई काम धंधा नहीं करता था और दिनभर ऐसे ही घुमता था। परिवार के लोग परेशान होकर उसे घर से निकाल देते हैं। वह घर से निकल कर भटकते हुए एक आश्रम पहुंचा। वहां उसने देखा कि एक गुरुजी हैं। उनके शिष्य कोई काम नहीं करते, बस मंदिर की पूजा करते हैं। उसने मन में सोचा यह बढ़िया है। कोई काम धाम नहीं, बस पूजा ही तो करनी है। गुरुजी के पास जाकर पूछा, क्या मैं यहां रह सकता हूं। गुरुजी बोले हां- हां क्यों नहीं ? लेकिन मैं कोई काम नहीं कर सकता हूं। गुरुजी बोले- कोई काम नहीं करना, बस पूजा करनी होगी। आनंद बोला- ठीक है, वह तो मैं कर लूंगा।

अब आनंद महाराज आश्रम में रहने लगे। ना कोई काम, ना कोई धाम। बस सारा दिन खाते रहो और प्रभु भक्ति में भजन गाते रहो। महीनाभर हो गया। एक दिन आई एकादशी। उसने रसोई में जाकर देखा, खाने की कोई तैयारी नहीं। उसने गुरुजी से पूछा आज खाना नहीं बनेगा क्या।

गुरुजी ने कहा- नहीं, आज तो एकादशी है, तुम्हारा भी उपवास है।

उसने कहा नहीं, अगर हमने उपवास कर लिया, तो कल का दिन ही नहीं देख पाएंगे। हम तो...., हम नहीं कर सकते उपवास ? हमें तो भूख लगती है। आपने पहले क्यों नहीं बताया ?

गुरुजी ने कहा- ठीक है तुम ना करो उपवास, पर खाना भी तुम्हारे लिए कोई और नहीं बनाएगा, तुम खुद बना लो। मरता क्या न करता। गया रसोई में, गुरुजी फिर आए देखो अगर तुम खाना बना लो, तो रामजी को भोग जरूर लगा लेना और नदी के उस पार जाकर बना लो रसोई। ठीक है, लकड़ी, आटा, तेल, घी, सब्जी लेकर आंनद महाराज चले गए। जैसा तैसा खाना भी बनाया। खाने लगा, तो याद आया गुरुजी ने कहा था कि राम जी को भोग लगाना है। फिर भजन गाने लगा- आओ मेरे रामजी, भोग लगाओ जी

प्रभु राम आइए, श्रीराम आइ, मेरे भोजन का भोग लगाइए... ।

कोई ना आया, तो बैचैन हो गया कि यहां तो भूख लग रही है और राम जी आ ही नहीं रहे। भोला मानस जानता नहीं था कि प्रभु साक्षात तो आएंगे नहीं, पर गुरुजी की बात मानना जरूरी है। फिर उसने कहा- देखो प्रभु राम जी, मैं समझ गया कि आप क्यों नहीं आ रहे हैं ? मैंने रूखा सूखा बनाया है और आपको तर माल खाने की आदत है। इसलिए नहीं आ रहे हैं, तो सुनो प्रभु ! आज वहां भी कुछ नहीं बना है। सबको एकादशी है, खाना हो तो यह भोग ही खा लो।

श्रीराम अपने भक्त की सरलता पर बड़े मुस्कुराए और माता सीता के साथ प्रकट हो गए। भक्त असमंजस में। गुरुजी ने तो कहा था कि रामजी आएंगे, पर यहां तो माता सीता भी आईं है और मैंने तो भोजन बस दो लोगों का बनाया हैं। चलो कोई बात नहीं आज इन्हें ही खिला देते हैं।

बोला- प्रभु मैं भूखा रह गया, लेकिन मुझे आप दोनों को देखकर बड़ा अच्छा लग रहा है, लेकिन अगली एकादशी पर ऐसा न करना पहले बता देना कि कितने जने आ रहे हो और हां थोड़ा जल्दी आ जाना। राम जी उसकी बात पर बड़े मुदित हुए। प्रसाद ग्रहण करके चले गए। अगली एकादशी तक यह भोला मानस सब भूल गया। उसे लगा प्रभु ऐसे ही आते होंगे और प्रसाद ग्रहण करते होंगे।

फिर एकादशी आई। गुरुजी से कहा- मैं चला अपना खाना बनाने, पर गुरुजी थोड़ा ज्यादा अनाज लगेगा। वहां दो लोग आते हैं। गुरुजी मुस्कुराए, भूख के मारे बावला है। ठीक है, ले जा और अनाज लेजा। अबकी बार उसने तीन लोगों का खाना बनाया। फिर गुहार लगाई।

प्रभु राम आइए, सीताराम आइए, मेरे भोजन का भोग लगाइए.... ।

प्रभु की महिमा भी निराली है। भक्त के साथ कौतुक करने में उन्हें भी बड़ा मजा आता है। इस बार वे अपने भाई लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न और हनुमान जी को लेकर आ गए। भक्त को चक्कर आ गए। यह क्या हुआ। एक का भोजन बनाया तो दो आए आज दो का खाना ज्यादा बनाया तो पूरा खानदान आ गया। लगता है, आज भी भूखा ही रहना पड़ेगा। सबको भोजन लगाया और बैठे- बैठे देखता रहा। अनजाने ही उसकी भी एकादशी हो गई।

फिर अगली एकादशी आने से पहले गुरुजी से कहा- गुरुजी, ये आपके प्रभु राम जी, अकेले क्यों नहीं आते। हर बार कितने सारे लोग ले आते हैं ? इस बार अनाज ज्यादा देना। गुरुजी को लगा, कहीं यह अनाज बेचता तो नहीं है, देखना पड़ेगा जाकर। भंडार में कहा इसे जितना अनाज चाहिए दे दो और छुपकर उसे देखने चल पड़े।

इस बार आनंद ने सोचा, खाना पहले नहीं बनाऊंगा। पता नहीं कितने लोग आ जाएं। पहले बुला लेता हूं, फिर बनाता हूं। फिर टेर लगाई-

प्रभु राम आइए, श्री राम आइए, मेरे भोजन का भोग लगाइए... ।

सारा राम दरबार मौजूद। इस बार तो हनुमानजी भी साथ आए, लेकिन यह क्या प्रसाद तो तैयार ही नहीं है। भक्त ठहरा भोला भाला, बोला प्रभु इस बार मैंने खाना नहीं बनाया। प्रभु ने पूछा क्यों ? बोला, मुझे मिलेगा तो है नहीं। फिर क्या फायदा बनाने का, आप ही बना लो और खुद ही खा लो।

रामजी मुस्कुराए, सीता माता भी गदगद हो गई। उसके मासूम जवाब से। लक्ष्मण जी बोले क्या करें प्रभु। प्रभु बोले- भक्त की इच्छा है, पूरी तो करनी पड़ेगी। चलो लग जाओ काम पर। लक्ष्मण जी ने लकड़ी उठाई, माता सीता आटा सानने लगीं। भक्त एक तरफ बैठकर देखता रहा। माता सीता रसोई बना रही थी, तो कई ऋषि मुनि, यक्ष, गंधर्व प्रसाद लेने आने लगे। इधर गुरुजी ने देखा खाना तो बना नहीं भक्त एक कोने में बैठा है। पूछा बेटा क्या बात है, खाना क्यों नहीं बनाया ? बोला, अच्छा किया गुरुजी आप आ गए। देखिए कितने लोग आते हैं प्रभु के साथ। गुरुजी बोले, मुझे तो कुछ नहीं दिख रहा तुम्हारे और अनाज के सिवा। भक्त ने माथा पकड़ लिया, एक तो इतनी मेहनत करवाते हैं प्रभु। भूखा भी रखते हैं और ऊपर से गुरुजी को दिख भी नहीं रहे, यह और बड़ी मुसीबत है।

प्रभु से कहा, आप गुरुजी को क्यों नहीं दिख रहे हैं ?

प्रभु बोले – मैं उन्हें नहीं दिख सकता।

बोला : क्यों, वे तो बड़े पंडित हैं, ज्ञानी हैं, विद्वान हैं। उन्हें तो बहुत कुछ आता है, उनको क्यों नहीं दिखते आप ?

प्रभु बोले- माना कि उनको सब आता है, पर वे सरल नहीं हैं, तुम्हारी तरह। इसलिए उनको नहीं दिख सकता।

आनंद ने गुरुजी से कहा, गुरुजी प्रभु कह रहे हैं, आप सरल नहीं है। इसलिए आपको नहीं दिखेंगे। गुरुजी रोने लगे, वाकई मैंने सब कुछ पाया, पर सरलता नहीं पा सका। तुम्हारी तरह और प्रभु तो मन की सरलता से ही मिलते हैं। प्रभु प्रकट हो गए और गुरुजी को भी दर्शन दिए। इस तरह एक भक्त के कहने पर प्रभु ने रसोई भी बनाई। परमात्मा केवल भाव के भूखे है। प्रभु के प्रति सदैव विश्वास व श्रद्धा होनी चाहिए, परमात्मा सदैव हमारे साथ है।

संकलनकर्ता
पं. भरत पालीवाल
महाकाल ज्योतिष अनुसंधान केंद्र

Let Us Help Your Business
GROW
Advertise With Us!
AFFORDABLE, TARGETED, NOW!
अपने बिजनेस
को दें
बुलन्दियां
सस्ती दरों पर
जयवर्द्धन
पत्रिका में
विज्ञापन
प्रकाशित कराएं।
स्पेशल ऑफर
विज्ञापन साइज
5 X 8 CM
सिर्फ
₹1000/-
सम्पर्क
शक्ति एडवरटाइजिंग
C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

शत शत नमन

मां भवानी भद्रकाली दुर्गेति,
सहत्रार चिद अंश रूपिणे प्रकटयति।
सैन्य शक्ति रूपिणे सनस्थिता,
नम: तस्मै, नम: तस्मै, नम: तस्मै नमो नम:।
मातृ देवो भव: हे मां भारती, हे धातृ देवी कृपां कुरु।
वीर भूमि के वीरो को सरहद के शेरो को,
मां दुर्गा के वाहकों को
मेरा शत शत प्रणाम, मेरा शत शत प्रणाम।
भारत माता की आन पर, मातृभूमि की शान पर,
रावणो के बाण पर, भारतीयों के प्राणो के मान पर,
सीमा प्रहरी हर केसरी को मेरा
मेरा शत् शत् प्रणाम, मेरा शत शत प्रणाम।
न सर्दी, न गर्मी, न ठंड, न बरसात।
न भूख, न प्यास, ज़ेहन में बस एक ही आस
मन में दृढ़ विश्वास, अदम्य साहस, शौर्य
संयम की मिसाल,
मानव जाति के गौरव हर जितेन्द्रिय को,
मेरा शत शत प्रणाम, मेरा शत शत प्रणाम।
पलक नहीं झपकने पावे,
संगीन से हाथ न सरकने पावे
स्वजनों की याद न बहकाने पावे,
मन के आंसू न कभी छलकने पावे
लांछन भी न हौंसले दहलाने पावे,
लोह पुरुष, वीर, जवान सो ही कहावे
ऐसे सपूतों को मेरा शत शत प्रणाम,
मेरा शत शत प्रणाम।

रवि बावा
श्री द्वारकाधीश मंदिर कांकरोली

सन्नाटा

जज्बातों का खून देख
अब ताज्जुब भी नहीं होता
न ही कुछ अटपटा सा लगता है
शायद आदत सी हो गई है हमारी।
वरना कितना तिलमिला जाते थे हम
खून का एक कतरा देखते ही
पर अब रोज-रोज होने वाला
खून खराबा और खून का रंग
हमारी आंखों की-
एक पोष्टिक खुराक बन गया है
जिसे हम सहमे से मूक हो
देखे जा रहे हैं
एक चलचित्र की तरह
झूंठ और फरेब को
कितनी बेबाकी के साथ
परोसने लगा है हमारा पड़ोसी
हमारे ही सामने
अपने ही लोगों के कंधों पर
बन्दूक रख कर
और हम गुमसुम, चुपचाप
महसूस करने लगे है
इस अन्धकार से
सच्चाई को चीरता
सन्नाटा-सन्नाटा-सन्नाटा

अफजल खां अफजल
जलचक्की, कांकरोली
मो. 9828475288

मेवाड़ धरा रौ मान

बढ़ियो मेवाड़ धरा रौ मान, गावै कण-कण यो गुणगान,
अमर कीयो रे अभिमान, याद रहसी यो बलिदान।।
हृदय स्थल राजसमंद रो बेटो है नारायण
देशहित बलिदान होयग्यो, मरणो मंगल जाण
वीर भूमि रो गुर्जर नारू, मुछां ने दी ताण
मर कै थां अमर होय ग्या, जग में हुई पहचाण।।
बढ़ियो मेवाड़ धरा रौ मान, अमर कीयो रे अभिमान

कायरता रो काम करयो, आतंक री बोली में
पाक परस्ती बारूद भरियो, बन्दूकों रो गोली में
कर दियो विस्फोट जोर से, घात लगाई टोली में
पुलवामा में शहादत होयगी भारत मां री झोली में।
बढ़ियो मेवाड़ धरा रौ मान, अमर कीयो रे अभिमान।।

रणबंकां बलिदान हुया, लाडेसर नारायण जी
सूरवीर अर संत हुया, मेवाड़ी धरा निर्वाण जी
रणवीरां रगत मिलायो, है हल्दीघाटी भीषण जी
माटी री सौरभ मेवाड़ीए है घणी मनभावण जी।
बढ़ियो मेवाड़ी धरा रौ मान, अमर कीयो रे अभिमान।।

पदमणियां जौहर जावै, चेतक भी फरज निभायो है
राणा प्रताप री जय गावै, माटी रौ करज चुकायो है
भगतां री अलख जगावै, मीरा भी धरम निभायो है
जीत मौत नें अमर होय ग्या नारू, गोविन्द गुण गायो है।
बढ़ियो मेवाड़ी धरा रौ मान, अमर कीयो रे अभिमान।।

गोविंदसिंह चौहान
भागावड़, भीम मो. 9783207045

शहीद नारायण की अंतिम यात्रा

शहीद नारायण की पार्थिव का ताबूत

बदले की आग में सुलगता मुल्क

कायरता की घिनौनी सुरत दिखाई है पाक ने
शेरो के झुण्ड पर घात लगाई है पाक ने
निर्दोष वीरों के पीठ में खंजर गौफे
नापाक आतंकी फसल उगाई है पाक ने।

है हिम्मत लड़ आकर आज सामने
गीदड़ भभकी तेरी अब आई सामने
शव बिछेंगे तेरे भी तेरे ही जहान में
साजिश रची है तुने वीरो के वाहन में।

वीर जवानों को मार बेबस तु हिन्द को करें
खून के आंसू मेरे मुल्क में क्यूं तु भरे
आदम जात को बदनाम तु ना यूं करें
है हिम्मत लड़ आकर भारत से सामना करें।

हिन्द के शहजादे पाक को मार गिराएंगे शहादत
के आक्रोश तुझको बर्बाद कर जाएंगे
उठी है हर आवाज़ अब इंसाफ को
लातों के भुतो को कुत्तों की मौत मार दिखाएंगे।

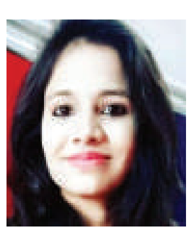

भावना सोनी
आमेट, राजसमंद

सपनों के पंख लगा उड़ता है डिफरेंट स्कूल

बचपन में हमारे माता पिता की अंगुलियां पकड़ हम पहुंचे थे स्कूल। तब हम कुछ भयभीत थे, कुछ हतप्रभ, कुछ संशयग्रस्त। फिर भी ढेर सारा आन्तरिक उल्लास जो अनजाने माहौल में कोई 'अपना' खोज रहा था। पापा मम्मी का सपना था, हमें पढ़ लिखकर एक जवाबदेह खाता कमाता इन्सान बनाए। यह स्कूल, वे बच्चों के लिए देखे जा रहे थे। 'ठौर' जो उनके बच्चे को एक श्रेष्ठ जीवन की राह के लिए बोधि वृक्ष बन जाए, जो उनकी अपनी उम्मीदों के लिए स्विच बोर्ड बन जाए और ज्ञानार्थ प्रवेश कर सेवार्थ प्रस्थान का प्रकाश स्तम्भ बन जाए।

इन बड़े बड़े सपनों के आगे अंगुली पकड़े बच्चे की आंख में तैरते सपने का एक ही सार था – मुक्त आसमान, जहां उड़ते उड़ते ही वह सब मिल जाए, जिसे शायद उसके साथ के बड़े बड़े योजनाबद्ध तरीकों से पाने की जद्दोजहद में तनावग्रस्त थे। किसको अपने अपने अरमनों की उड़ान कर कितना कुछ हासिल हुआ, यह तो नहीं मालूम, लेकिन यह तय है कि 'स्कूल' नामधारी स्पन्दित कृति को हमने नियम, उपनियम, आचार, आदेश, निर्देशों की सीमा में बांध दीवार पर फ्रेम जड़ी तस्वीर में बदल दिया। यह 'स्कूल' बच्चों और बड़ों के लिए पूजा अर्चना का विषय बनकर रह गया। नमस्कारणीय हो गया, अनुकरणीय नहीं। न ही बड़ों की दृष्टि में वह बच्चों के लिए ज्ञान या बोध का वट वृक्ष बन पाया और न ही मुक्त आसमां।

यह कहानी फिर सही कि दोनों की उम्मीदों पर हमारे शिक्षण संस्थान खरे क्यों नहीं उतरे, लेकिन यह सोच शिक्षा सेवियों को बैचेन अवश्य किए हुए रहा। राजसमन्द में सन् 2011 में शिक्षा जगत् में प्रयोजना अथवा सरोकार मूलक अनुष्ठान का अवसर बना। जब विद्यालयों के कार्य व्यवहार में संवेदना और परिणामगत परिवर्तन के अभाव को बहुत गहराई तक विचार कर अणुव्रत विश्व भारती द्वारा स्कूल सिस्टम कर उबाऊ शिक्षण प्रणालियों को खंगालने की दिशा में यहां इस दिशा में पहले से हो रहे प्रयासों को एकीकृत रूप दिया गया। यह प्रयोजना 'स्कूल विद ए डिफरेन्स' (स्वाद) नाम से पहचानी गई, जिसे उच्च स्तरीय शैक्षिक, वैज्ञानिक मनीषा सम्पन्न तत्कालीन राष्ट्रपति अब्दुल कलाम का प्रोत्साहन परक सान्निध्य मिला।

अणुविभा अपने जन्मकाल से ही बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए एक प्रतिबद्ध सामाजिक संस्थान के रूप में श्री मोहनभाई जैसे बालसेवी की मौलिक बाल मनोविज्ञान आधारित संकल्पनाओं के मूर्तिकरण का साक्ष्य बना रहा है। बालोदय जैसे सूक्ष्म और रेशमी भावों के कोमल तानों बानों से बुना गया अणुविभा का शैक्षिक प्रकल्प अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी के छोटे छोटे संकल्पों से मानस परिवर्तन के मानव अभियान को समर्पित है। व्यक्ति निर्माण से समाज अभिहित शान्ति और अहिंसा की संस्कृति को बालकों की जीवनशैली बनाने की कोशिशों का नाम है। अणुविभा की शैक्षिक प्रायोजना 'स्कूल विद ए डिफरेन्स'।

जीवन मूल्य या कहे संस्कार शिक्षण, जिसके माध्यम से बच्चों में परिवर्तन के लिए शिक्षा के औपचारिक पाठ्यक्रम में अनेक संभावनाएं इनपुट के रूप में समाहित है। योजनाबद्ध एक विशेष व तात्कालिक परिणाम पर आधारित प्रक्रिया से संस्कार के बीजारोपण व पल्लवन के प्रयास कितने सफल हुए, यह युवा पीढ़ी की वर्तमान दिशा व दशा को देखकर अनुभव किया जा सकता है। यह क्रॉनिक फेल्योर के भविष्य के खतरों की ओर एक भयावह संकेत है। ऐसे में सुधी शिक्षा सेवियों के लिए अनौपचारिक विकल्पों पर विचार करना जरूरी हो गया। अणुविभा की अनुशंसित बालोदय प्रवत्तियों और इनके संप्रयोग द्वारा स्कूलों को बंधे बंधाए फ्रेम और सिस्टम की पारंपरिक विधाओं से मुक्त कर नया सीधे सीधे 'मानस परिवर्तन' के तौर तरीकों से परिचित कराना वह 'डिफरेन्ट' है, जिस शिक्षक को रूपान्तरित कराए जाने का हमारा आग्रह है।

इस प्रायोजना को वृहत् और सूक्ष्म रूप में राजसमन्द जिले के विधाओं में मुख्यत: कक्षा 5 से 8 तक अध्ययनरत बच्चों के साथ जोड़ा गया है। सभी विद्यालयों में

इस प्रायोजना की धारणा के समस्त शिक्षा जगत परिचित हो, यह हमारा वातावरण निर्माणगत अभीष्ट है। दूसरी ओर इस प्रायोजना के उद्देश्य व लक्ष्यों की चरणबद्ध सूक्ष्म क्रियान्विती के लिए जिले की सात पंचायत समितियों के सात नोडल उच्च माध्यमिक विद्यालयों के नेतृत्व में न्यूनतम 10 से 50 विद्यालयों में (200 विद्यालय) क्रियान्वित किया जाना प्रारम्भ किया गया है। शुरुआती परिणाम उत्साहवर्द्धक हैं। जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक व प्रारम्भिक) द्वारा स्वीकृत व जिला कलक्टर द्वारा शिक्षा नई दिशा तलाश करने हेतु किए जा रहे कार्य की अनुशंषा सहित अब तक जिले के समस्त शिक्षा प्रशासकों को परिचित कराने के साथ एक सौ विद्यालयों तक प्रायोजना, सौपानों की जानकारी, बालोदय क्लबों का गठन कर स्थापना और विभिन्न वार्ता सत्रों, बाल मनोविज्ञान आधारित रुचि क्षेत्रों में सृजनात्मक गतिविधियों एवं दिशा में हम आगे बढ़ रहे हैं। शिक्षा व सामाजिक क्षेत्रों के सेवाभावी दक्ष शिक्षा मनीषियों के सतत् निर्देशन व प्रबोधन से यह प्रायोजना सदिश बनी है।

औपचारिक शिक्षण अधिगम कार्यक्रमों के सूचना व संज्ञानात्मक पक्ष से आगे जाकर व्यक्तिगत विकास के अनेक क्षेत्रों में बालकों को संवाद का अवसर देकर उनके बोध व कौशलगत विकास की ओर अग्रसर कराना उन असंज्ञानात्मक क्षेत्रों का स्पर्श है, जो बच्चे का समाज के साथ अनुकूल कर सकते हैं। मूल्यबोध, पर्यावरण के प्रति चेतना, स्वच्छता, शान्ति व अहिंसात्मक व्यवहार के बोध हेतु विद्यालय में शारीरिक, मानसिक दण्ड मुक्ति का वातावरण एवं योग जीवन विज्ञान के प्रयोगात्मक अभ्यास द्वारा स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मन की विचारधारा का मूर्तिकरण इस प्रायोजना के चिन्हित क्षेत्र हैं। इन पर शिक्षक बालक अभिभावक की संयुक्त सोच बनाने की दिशा में हम इन वर्गों की हर छोटी सफलता की कहानियों को प्रोत्साहित व सम्मानित करना चाहते हैं। एक प्रकार से यह 'प्रतिभा उत्खनन' है, जो इस प्रयोजना का अंग है।

'स्कूल विद एक डिफरेन्स' शिक्षा व्यवस्था के पारंपरिक स्वरूप में जहां जरूरी है, बदलाव या परिशोधन का विनम्र अभियान है। श्रेष्ठ संस्कारों के शिक्षण की कार्यशाला या कहे प्रयोगशाला के रूप में अणुविभा जो सामाजिक सृजनात्मक भूमिका का वहन कर रही है। 'स्वाद' उसी भावबोध की ऊर्जावान प्रस्तुति है।

डॉ. राकेश तैलंग, संयोजक
संवाद प्रायोजना अणुविभा, राजसमंद
मो. 94602-52308

नेक दिल इंसान थे बंगाली मोलाना साहब

आज से लगभग 75 साल पहले दूरदराज बंगाल से कांकरोली की इस धरती पर एक मोलाना ने कदम रखा और यहीं के होकर रह गए। यहां बहुत ही कम अनुपात में रह रहे मुसलमानों के बच्चों को तालीम देने का काम प्रारम्भ किया। आपने सही मायने में मुस्लिम धर्म का ज्ञान यहां के लोगों में जागृत किया और कौमी एकता बनाए रखने में अपना भरपूर योगदान दिया। कुरान में लिखी अरबी की आयतो का उर्दू और हिन्दी में तरजुमा कर बच्चों को समझाते थे। कुरान में लिखे देश प्रेम के जज्बे को समझाकर कहते थे, मुसलमान जिस देश में पैदा होता है, रहता है, खाता है, पीता है, उसे उस देश के प्रति वफादार होना चाहिए। ये कुरान का फरमान है।

शायद यही कारण रहा कि सन् 1947 के बंटवारे को लेकर आज तक इस कांकरोली में कभी भी धार्मिक उन्माद या साम्प्रदायिक दंगा नहीं हुआ। माटा मोहल्ला के मदरसे में बच्चों को पढ़ाया करते थे और बहुत ही सादा जीवन जिया करते थे। यहां के बाशिन्दे उनका बहुत ही सम्मान किया करते थे। हर समस्या के समाधान के लिए लोग उनके पास जाया करते थे और वे कुरान व हदीज के दायरे में उस समस्या का समाधान किया करते थे। लोगों को आपस में मिलजुलकर रहने और भाईचारे का संदेश आप सदैव दिया करते थे। ईद के एक दिन पहले वे अपने वर्षभर की कमाई को बच्चों में ईदी के रूप में बांट दिया करते थे। वे लगभग 50 साल तक यहां के लोगों की सेवा में जुटे रहे और बच्चों को तालिम देते रहे। उन्होंने कभी भी धनसंग्रह नहीं किया, न ही मकान बनाया। एक दिन वह भी आया। वह दिन था 19 जून 1977, तब उन्होंने अपनी रूह छोड़ इस दुनिया को अलविदा कह दिया। उनकी मजार आज भी सलूस रोड कांकरोली स्थित कब्रिस्तान में एक दरगाह में है, जहां लोग फूल, अगरबत्ती चढ़ा आज भी वहां मन्नत मांगते हैं और अपने हक में दुआ की प्रार्थना करते हैं। प्रतिवर्ष उनके मृत्यु दिवस पर एक रोजा उर्स का मेला लगता है, जिसमें कई उलमा उनके बारे तकरीर फरमाते हैं।

गुरूओं के गुरू छन्नुलालजी मास्टर साहब

प्रभु श्री द्वारकाधीशजी की पावन नगरी कांकरोली में शिक्षा के क्षेत्र में अपनी अनूठी पहचान रखने वाले श्री छन्नुलालजी मास्टर साहब को आज भी 70-80 वर्ष के वे प्रौढ़ लोग बड़े अदब के साथ उन्हें याद करते हैं।

श्री मथुरादासजी गौरवा के घर में जन्मे श्री छन्नुलालजी मास्टर साहब ने इस गांव की भावी पीढ़ी को बुनियादी शिक्षा में इतना निपूर्ण किया कि आपके पढ़ाए हुए कई लोग इंजीनियर, डॉक्टर, प्रोफेसर, अध्यापक और कई प्रशासनिक अधिकारी बने। शिक्षा की मजबूत नींव ही आपकी देन थी। अपने घर पर ही आप अपने यहां आए बच्चों को पढ़ाया करते थे। गांव के सभी समुदायों के बच्चे आपसे शिक्षा ग्रहण करते थे।

शाम को रोज भ्रमण को जाना आपका उपक्रम था। घर से रोज शाम आप धोती, कुर्ता, अचकन पहन हाथ में छड़ी ले एक सलीकेदार व्यक्तित्व की तरह निकलते, तो गली मोहल्लों में असंख्य प्रणामों का जवाब देते हुए राजसमंद की पाल पर चहलकदमी करने निकल जाते थे। आपके साथ कई गणमान्य लोग भी घुमने जाया करते थे। खास तौर से भवानीशंकरजी वकील साहब, राधारमणजी पालीवाल, सालगरामजी वकील साहब आदि राजनीति से लेकर सामाजिक वार्ताओं का दौर चलता व वे आपस में मंत्रणा करते, सिंचाई विभाग के ऑफिस से लेकर कमलबुर्ज की छतरी के बीच में बनी एक छतरी पर जाकर बैठ जाया करते है, जहां पर विचार विमर्श का दौर चलता रहता। अब उस छतरी का नाम अदब की छतरी हो गया है। क्योंकि छन्नुलालजी ने कई अदबी बातें और विचार इसी छतरी में बैठकर किए थे। आज भी उस अदब की छतरी पर इस शहर के बुद्धिजीवी शाम को घूमने जाते हैं और उस अदब की छतरी में बैठकर तहजीब की बाते करते हैं और गांव की बुनियादी समस्याओं पर विचार करते हैं, जिसका शुभारम्भ छन्नुलालजी ने किया था, वह आज भी कायम है।

छन्नुलालजी मास्टर साहब एक परिपक्व बुद्धिजीवी थे। अपने अंतिम समय तक बच्चों को शिक्षा के प्रति जागरूक करते रहे और बालकों में तहजीब, अदब और संस्कार का ज्ञान बिखेरते रहे। ऐसे सद्गुणी गुरूजी को भावभिनी श्रद्धांजली।

अफजल खां 'अफजल'
जलचक्की कांकरोली
मोबाइल: 9828475288

मासिक "जयवर्द्धन" पत्रिका के ग्राहक बनें और आकर्षक डिस्काउंट पाएं

नाम- श्री/श्रीमती...

पता .... राज्य ....

फोन (निवास) ....मोबाइल ....ई-मेल ....

कृपया **जयवर्द्धन** के नाम से रु ....का डी.डी या चैक नं. ....

तिथि .... प्राप्त करें।

बैंक का नाम ....

(राजसमंद जिले से बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू अधिक भेजें।)

अवधि	अंकों की संख्या	कवर मूल्य	बचत	सब्सक्रिप्शन दर
1 वर्ष	12	240	40	200 रुपए

कृपया इस फार्म को भरकर डी.डी. या चैक के साथ हमें इस पते पर भेजें,
कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला-राजसमंद (राजस्थान) मोबाईल 9414239648, 9950084705

जयवर्द्धन के विशेषांक टेलीफोन हेल्पलाइन मात्र 50 रुपए में प्राप्त करें।

नियम और शर्तें :

1. यह योजना केवल भारत में ही मान्य है।
2. विशेष पेशकश सीमित अवधि के लिए है।
3. राजसमन्द जिले के बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू. अधिक भेजें।
4. पत्रिका साधारण डाक द्वारा भेजी जाएगी तथा डाक गुम हो जाने पर जिम्मेदारी संस्थान की नहीं होगी। सूचना प्राप्त होने पर यदि अंक उपलब्ध रहता है तो पुन: निशुल्क प्रेषित कर दिया जाएगा।
5. पहले अंक को आप तक पहुंचने में एकाध सप्ताह लग सकता है।
6. कूरियर रजि.डाक से मंगवाने के लिए ग्राहक को कूरियर रजि. डाक खर्च अतिरिक्त वहन करना होगा।
7. सभी विवादों का न्याय क्षेत्र राजसमन्द न्यायालय के अधीन होगा।

युवा जनसेवा को सबसे बड़ा धर्म मानें : रावत

देवगढ़ में युवा सशक्तिकरण पर कार्यशाला

देवगढ़. केन्द्रीय खेल मंत्रालय द्वारा नेहरू युवा केंद्र, कॅरियर महिला मंडल के तत्वावधान में संकल्प से सिद्धि न्यू इंडिया के तहत युवा सशक्तिकरण कार्यशाला भीम विधायक सुदर्शनसिंह रावत के मुख्य आतिथ्य में हुई। विधायक रावत ने कहा कि युवा जोश के साथ काम करें। काम करने का उत्साह ही मंजिल तक पहुंचा देता है। युवा संकल्प लेकर जीवन लक्ष्य को हासिल करें और स्वरोजगार स्थापित करने को प्राथमिकता दें।

जनसेवा, देशभक्ति को अपना सबसे बड़ा धर्म मानें। इस दौरान उपखंड अधिकारी काशीराम चौहान, पूर्व प्रधानाचार्य गहरी लाल पालीवाल, पूर्व शिक्षाधिकारी रमेश कंसारा, शिक्षाविद राकेश शर्मा, वीरांगना मीणा, भारत विकास परिषद अध्यक्ष सत्यनारायण डिडवानिया, कॅरियर महिला मंडल अध्यक्ष निशा चुण्डावत आदि संबोधित किया। संचालन द कॅरियर कम्प्यूटर ज्ञान केंद्र प्रबंधक महेश पालीवाल ने किया। इस दौरान नरेंद्र सोनी ने युवा सशक्तिकरण पर भव्य रंगोली बनाई। इस अवसर पर रमन पुरोहित, धर्मचंद पालीवाल, नरेंद्र सोनी, वंदना सेन, भावना पालीवाल, माहिनूर शेख, अवंतिका शर्मा, विजय लक्ष्मी धाभाई आदि थे।

मोबाइल मीठा जहर

दोस्तों हम सब मोबाइल के सदुपयोग तो जानते ही है। विद्यार्थी, जवान, बुजुर्ग सबके जीवन के लिए आंखों का तारा है- स्मार्ट फोन। यह फोन शायद इतना स्मार्ट है कि भारत में बैठे हुए व्यक्ति को भी अमेरिका घुमा सकता है, जिसने कभी असलियत में 5 दोस्त नहीं बनाए। उसके फेसबुक पर 5000 दोस्त है। जी हां मोबाइल भी अब स्मार्ट हो गया है, लेकिन हर सिक्के के दो पहलु होते हैं। मोबाइल का दूसरा पहलु क्या है? मार्केट में अब नया ड्रग आया है, नाम मोबाइल फोन। यह ड्रग हमारे शरीर के लिए इतने घातक है ही। साथ ही साथ रिश्तो के लिए भी, आने वाले कुछ सालो में मोबाइल को चढ़ाने के लिए क्लासेज शुरू करनी पढ़ेगी। अनेक विद्वानों का कहना है कि आने वाले कुछ सालो में मोबाइल पारिवार के सदस्यों की जगह ले लेगा। अत्यधिक आश्चर्य की बात है कि जिस वंश के महापुरुष ने इसका आविष्कार किया, उसने कभी इसका खुद इस्तेमाल नहीं किया। स्मार्ट फोन का स्तर ऐसे नापा जा सकता है कि इसने परिवार के सदस्यों को दूर कर दिया है। आज तक अनेक प्रलयकारी अविष्कार हुए, किन्तु इनमें सबसे प्रमुख है मोबाइल। अभी तक कहा जा रहा था कि तीसरा विश्व युद्ध पानी के लिए होगा, किन्तु तीसरा विश्व युद्ध मोबाइल एवं टेक्नोलॉजी के लिए होगा। तीसरे विश्व युद्ध में बम नहीं बल्कि मोबाइल का इस्तेमाल होगा। मोबाइल के कारण एकाग्रता घटेगी एवं हमला करना और भी आसान होगा। सिर्फ यही नहीं मोबाइल के अनेक दुष्प्रभाव है। मोबाइल का अर्थ अनेक भाषा में अलग है। जैसे मोरको भाषा में 'मो' मतलब मेरा, 'बा' मतलब अच्छा एवं अंग्रेजी में 'इल' मतलब बीमारी और अंत तो हम कह सकते हैं- मोबाइल मतलब मेरा अच्छा अंत।

नमन त्रिवेदी
संतोषीनगर, कांकरोली
82792-34754

यह कॉलम अंग्रेजी ज्ञान वृद्धि के लिए विद्यार्थियों को समर्पित है,
जो शैक्षिक मार्गदर्शन व इंग्लिश स्पीकिंग में सहायक सिद्ध होगा।

How to Manage with Exam Stress?

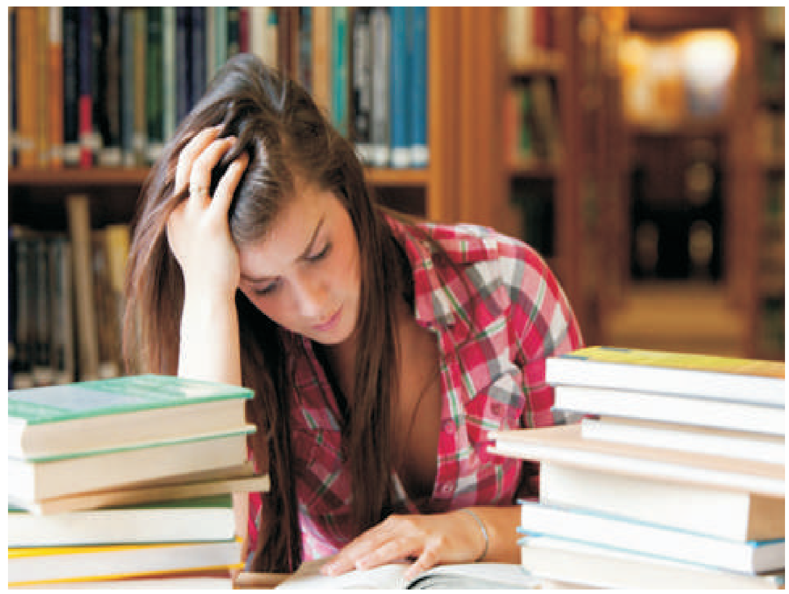

Dear Reader

A few days back one parent visited me and asked for help as their son was going to appear for X Board Exam in March 2019but was going very dull day by day. He was neither eating well&nor keeping well.I talked to the child and found that it was the exam stress and fear of not able to do well.

Dear all I feel it's not the problem of one child but almost all are under pressure during this exam time. The word 'EXAMINATION' has always presented itself with stress if this was your turn, mine or today its of our children.

Let's understand what is stress-

Stress is an emotional or bodily reaction to physical, psychological or emotional demands. But it's a fact of life. When you feel stressed by something going around you, your body releases chemicals into blood which disturbs your internal balance and so you appear dull, anxious, worried, puzzled, tensed and stressed with a question what to do & how to do?

See, a little stress & nervousness helps you to prepare and present yourself more efficiently if it is manged however unmanaged stress can lead you to surf negative thoughts and undesired direction or outcome.

Some causes of exam stress in learners are-

- Own Expectations& less preparation
- Expectations imposed by others such as parents, relatives, peer group or society
- Academic Pressure
- Frustration of Imbalance
- Lack of confidence
- Puzzled mind, not having skills to manage the time in hands
- Not having enough time

How to manage with exam stress effectively-

- First and foremost is to add balance to your life. Sleep well & eat well.
- Identify & accept your weaknesses and strengths.
- Utilize your strengths to manage with stress.
- Don't allow your stressful thoughts to eat you up.
- Don't flow with your nervousness but change your thought process.
- Have confidence in yourself.
- Say aloud 'I can do it', 'It's all going to be great'.
- Utilize the time in hands very smartly.
- Be positive and do what you can.
- If nothing works, write your worries on a paper &simply give it to the one whom you trust upon.
- Share with your parents how you feel inside.

Parents are the only one who can understand the inner situation of a child very well as they are the closet ones and so they can play an important role to support in managing their exam stress-

- Look at your child with a new eye everyday as the sun rises with a new opportunity.
- At the time of examination, they seek more mental & emotional support.
- Spend time with your ward, don't just leave them unattended for longer period in the name of preparation.
- Take care of their proper & healthy diet for both physic & mind.
- Support your ward from there where s/he is at present, without commenting or taunting on her/him previous mistakes.
- Don't yell, criticize& punish them for every small mistake.
- The home must be a peaceful environment like keeping the TV off, less communication on phone, less arguments among family members etc.
- Even if a child was not serious towards academic earlier, s/he must be serious now. Let them feel secure with your presence & they will be able to improve 10-20% better.
- It's never too late to have a new beginning. Give them this confidence.

Though it's hard to believe in yourself when the circumstances are not favourable or you are to prove yourself through examination but remember that's when you need it the most. A little stress is always good as it improves your performance but for any reason if you are fighting with the bottled-up stress and trying to deal with it on your own, don't just suffer but express the fear, ask for help and you will see many hands around you to support. Remember your stress exists only till you let it.

Your competition is with yourself not with others. Never lose the hope!

Wishing you all Good Luck

Manisha Lashkari
Principal Smart Study School Rajsamand
Mob. 95713-73401

एक शाम शहीदों के नाम सांस्कृतिक संध्या के कई कार्यक्रम

ऐ वतन, वतन तु आबाद रहे.. पर थिरके नन्हें कदम

राजसमंद. पुलवामा आतंकी हमले में शहीद हुए 42 शहीदों की याद में शहर व देहात में कई जगह कवि सम्मेलन हुए, तो कहीं देशभक्ति गीतों के नाम सांस्कृतिक संध्या आयोजित हुई।

जिला मुख्यालय पर जेसी ग्रुप, महालक्ष्मी म्युजिकल ग्रुप व राजस्थान पत्रिका के तत्वावधान में जलचक्की चौराहे पर एक शाम पुलवामा शहीदों के नाम भक्ति संध्या हुई। कार्यक्रम में जोधपुर के मोइनुद्दीन मनचला, तासोल के लेहरूदास वैष्णव व मुंगाणा, चित्तौड़गढ़ के जगदीश वैष्णव ने एक से बढ़कर एक देशभक्ति भजनों की प्रस्तुतियां देकर लोगों में देश प्रेम का जोश व जज्बा लगाया। तीनों ही भजन कलाकारों ने शहीदों के लिए मुफ्त भजन गाते हुए बिनोल के शहीद नारायणलाल गुर्जर के परिजनों के लिए आर्थिक सहयोग राशि संग्रहित की। इसमें करीब डेढ़ लाख रुपए एकत्रित हुए, जो नारायणलाल गुर्जर के परिजनों को दी गई। जेसी ग्रुप अध्यक्ष अशोक टांक की इस पहल को चौतरफा सराहा गया। उसके बाद फिर नगरपरिषद राजसमंद व जेसी ग्रुप के तत्वावधान में दोबारा कांकरोली पुराना बस स्टैंड पर कवि सम्मेलन हुआ, जिसमें भी देश- प्रदेश के कवियों ने बिना शुल्क लिए शहीदों की शाम में हिस्सा लेकर भावांजलि अर्पित की।

मोही. आजाद पब्लिक स्कूल में वार्षिकोत्सव एक शाम शहीदों के नाम सांस्कृतिक संध्या हुई। अध्यक्षता शिक्षा विभाग के आरटीआई अधिकारी छगनलाल पूर्बिया ने की। विशिष्ट अथिति सेवानिवृत्त संस्था प्रदान मंजू व्यास, अभिभावक समिति अध्यक्ष ओकारसिंह भाटी, डॉ. ओकारलाल चपलोत, जगदीशचंद्र उपाध्याय, कन्हैयालाल सोनी थे। फिर कार्यक्रम में छात्र छात्राओं ने ए वतन, वतन तु आबाद रहे..., पापा तो भगवान है..., दादी अम्मा मान जाओ... सरीखी एक से बढ़कर एक प्रस्तुति दी। संचालन पूजा कीर ने किया। इस दौरान संतोष शक्तावत, शबाना बानू, दीपक कीर, दिनेश, महेश, किशनलाल, सोहनलाल, रामेश्वर लाल, कैलाश चंद्र आदि थे।

हमारे अधिकृत विक्रेता :

राजसमंद :
- महालक्ष्मी किराणा स्टोर : 97999-30985
- देवनारायण किराणा स्टोर : 98298-92504
- एचएस ट्रेडर्स : 96948-16513

सनवाड़ :
श्री नागणेचा किराणा स्टोर : 99280-96170

केलवा :
न्यू बॉम्बे ट्रेडिंग : 77720-08888

आमेट :
श्री देवनारायण ट्रेडर्स : 96024-63254

रिछेड़ :
श्रीनाथ किराणा एवं डेयरी : 99839-96443

चारभुजा :
देवराज किराणा स्टोर : 81075-98399

उदयपुर :
विजेन्द्र ट्रेडिंग कंपनी : 77920-03333

नाथद्वारा :
वंदना ट्रेडिंग कंपनी : 70145-87513

देवगढ़ :
महालक्ष्मी प्रोविजन स्टोर : 96024-50455

मात्र
200/-
में सालभर आएगी
जयवर्द्धन
आज ही कॉल कर बुक कराएं प्रति :
94142-39648

An ISO -9001:2015
M. 9829445469, 9929495228

शाईन कम्प्यूटर्स

RKCL
IT shapes future
(Rajasthan Knowledge Corporation Limited)

C.F.A (Tally)
पूर्ण व्यवसायिक कोर्स
GST/Tally ERP

SHiNE

RS-CIT | Tally पूर्ण व्यवसायिक कोर्स | DCA | PGDCA | PDCA | Spoken English

राजसमन्द का नं. 1 कम्प्यूटर संस्थान

शास्त्री मार्केट, कांकरोली फोन नं. 02952-220469
शीतला माता मंदिर के पास, राजसमंद फोन नं. 02952-220228

आवौ बेना लड़ां

आएदन गामां में अर स्हेरां में मिनख लड़ता दिखे। घणां खरा मिनखां रौ तो कामईज लड़णौ के लड़ावणौ वियां करै। यूं लागे जाणै जंगली जानवर कांकड़ छोड़ी नै मिनखां री वस्ती में रैवा लागा है। गाम वाळा कैवे के स्हेरां रा मिनख घणा समझदार वैवे। पण वठै तो रासौ वतो वगड्यो दिखे है। चोर्यां चकार्यां, खून खराबौ नै लूट खसोट रौ कई पार कोनी। जाणै घणा खरा नै तो भगवान इण खातरईज वणाया है के थेंई होरा मती रीज्यौ नै दूजा नैई होरा मती रैवा दीज्यौ। ओईज थांरो काम है। **योईज ढाण अबाणु पाकिस्तान रो है।**

एक गाम में अश्या लखणां री एक लुगाई रैवती ही। व्हा आंपणी रैणी सैणी सूं तो घणी स्याणी दिखती। घर रा काम करवा नै ढांढां ढौर अवेरवा में कणी सूं पाछै कोनी, पण गेले चालता मिनखां सूं भचीका लेवा में कदी कोनी चूकती। आखौ गाम जाणतौ आ घणी लड़ाक है। दन में एक दो दांण कणी सूं लड़्यां वना झक कोनी पड़े। जियां थाक्यौ गदेड़ौ राखोड़ा में लौट्यां पछै राजी रैवे। वणी नैई लड़वा री घणी भावड़ आयां करती।

गाम में कोई मिनख एक दूजा रै भड़े सूं निकळे तो वणी ने वतळावणौ आछौ माने। अणबोल्यो कोनी निकळे। पण अणी लुगाई नै तो वतळावणोई घणो मूंगो पड़तो। एक दन एक जणो वणी नै बैठी देखी ने बोल्यो– कई सा! बैठ्या हो? व्हा तड़ाक देती बोली म्हूं कई थने हूती दिखूं ? वणी बापड़े वात पळटी– म्हूं तो थांने ओ पूछूं हूं के थें आछा तो हो? व्हा तो उठताई बोली– म्हूं कई थने मांदी दिखूं ? वणी मिनख होच्यो– म्हे गेले चालतां गोबर में भाटो पटक्यो। व्हो आगे चालतो वण्यो।

एक दन एक करसाणी वणी रो नुंवो घाघरौ देखी ने पूछ्यो– ओ तो थांने घणो आछो लागे। व्हा बोली थने कोनी खटतो वैवे तो फाड़े नांक। थारो काळजो ठाड़ो पड़ी जावेला। वणी कियो– म्हूं तो आ वात पूछणी चावती के ओ कांई भाव लाया? व्हा पाछी रीस करी ने बोली– म्हारे तो फोकट में आयो। अबे अणी सूं थारे कांई पीड़ा है? अठा तांई के वणी सूं कोई रामा सामी करतो तो कैवती– म्हे थारो नै थारे राम रो कांई लीदो है? परबात पेल्यां म्हारा सूं राम राम कां करै? कई चावे थुं ? एक वात तो गाम रा मिनख आज तांई कोनी भूल्या। वणी ने मुंडो धोवती देखी ने गामरे पटेल पूछ्यो– कई सा। मुंडो धोई रिया हो? जाणे व्हा तो लड़वा तियार बैठी ही, बोली– मुंड काट्या! मुंडो कई म्हुं थारे माथे धोई री हूं? मुंडो धोई री हूं तो म्हारे धणी पे धोई री हूं। थारे कांई पीड़ा है? थुं रूपाळो घणो है? पटेल वियो तो कई वियो? रींगणा जस्यो तो दिखे, काळो ढीर। बापड़ा पटेल रे तो जाणे दाळ में कांकरो आई ग्यो। मुंडो वगाड़ी ने चालतो वण्यो अर पाछो फरी नै कोनी देख्यो।

गामरा मनख हारे थांके नै ओ ऐको करी नाक्यो के अबे अणी लुगाई ने कदी वतलावणी कोनी। थोड़ा दन आंपां अणी सूं कई वात कोनी करां ला तो आ पछे मनखां सूं लड़णो छोड़ी देवेला के गाम छोड़ी ने परगाम जाणो पांती आई जावेला। आंपां होरा वेई जावां ला। अबे तो दूजो कई गेलो दिखे कोनी। ओ काम करणो पड़े।

वा सा अबे मनख वणी रै भड़े सूं निकळे तो मुंडो फेरी ने चालतो वणे। व्हा बोलवा लागे तोई वात हुणी– अण हुणी करी ने परा जावे। अणी भांत पांच दस दन वणी रे घणा खोटा निकळ्या। अबे कई करे ? थोड़ा दन तो व्हा काठी वेई ने आपणो काम करती री, पण लड़वा री भावड़ घणी आवा लागी तो भड़ली पोळ में हबळाई वळे ने एक भोळी भाळी लुगाई सूं बोली– थें तो आज तांई कणी सूं लड़्या कोनी, आवो आज आंपा लड़ा। अचानक वणी री वात हुणे ने व्हा तो धक धक धुजवा लागी। व्हा पाछी बोली– कई थें हुण्यो कोनी ? व्हा मुंडो फेरी ने बोली म्हुं थांसू कां लड़ूं ? म्हारो तो ओ जूतोई कोनी लड़े। अबे व्हा किंकर लड़े ? दूजी तो बळती लाय में पाणी परो नाक्यो। वणी एक लड़वा रो गेलो काढ्यो बोली– रांड थुं मने जूतो वताई री है? जूतो तो थारे रांडोल्या धणी ने वतावजे। आ वात हुणाताई वणी भोली लुगाई नेई रीस आई गी। बोली थें म्हारा धणी ने रांडोल्यो किंकर केई दीदो। रांडोल्यो तो थांरो धणी है। थुं आखो दन मनखां सूं भचीका लेती रेवे अर व्हो गुगा री नाई बैठ्यो बैठ्यो थारो भसवाड़ो हुण्या करे। व्हा सा अबे तो लोखण ताती हो घण पटकवारी देर ही। थें म्हारा धणी रांडोल्यो कियो चाल म्हारे सागे थने वताऊं, केवताई वणी तो चोटी पकड़ी ने खेंची अर दोई बात्यक बुत्ये आईगी। हाको हुण ने गाम रा मनख भेळा वेई ग्या। दोयां ने छोड़ाई ने गेले कीदी। वणी लड़ाक लुगाई ने तो कणी कई केणो आछो कोनी जाण्यो पण भोळी भाळी ने हुदी हादी लुगाई रे डाम चेंटाई दीदो– के धोळ्या रे भड़े काल्यो बंधे तो लुण नी तो लखण तो लेई लेवे। लड़ाक लुगाई रे तो आज रो दन आछो निकळ्यो, काल री काले देखी जासी। पण भोळी लुगाई रे लागा डाम री पीड़ा दूजो कुण जाणी सके ?

जवानसिंह सिसोदिया
वरिष्ठ साहित्यकार, नाथद्वारा
02953-233717

गायत्री पब्लिक सीनियर सैकण्डरी स्कूल

धोइन्दा, जिला-राजसमंद

(सृजन -P.S.)

Science

Commerce

Art's

हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम

Phone : 02952-221818, 220818 Mob. 9314421818,8875445599

जयवर्द्धन

की वार्षिक बुकिंग मात्र 200 रुपए में

सम्पर्क : 94142-39648

उदयपुर, जयपुर, जोधपुर क्यों आपके शहर में सर्वश्रेष्ठ मंच | राजसमन्द में पहली बार सर्वश्रेष्ठ फैकल्टी एक ही मंच पर

संकल्प कोचिंग क्लासेज

रेनबो कलर लेब, छतरियों के पास, कांकरोली

:: संकल्प टीम ::

रिजनिंग - राकेश चौधरी, जितेन्द्र मीणा सर, जयपुर
शिक्षा मनोविज्ञान - सुरेन्द्र सांगवान सर, D.K. सिंघल
राजनीति विज्ञान - ओ.पी. सर, (संरक्षक), सुमेर सर
मैथ- जितेन्द्रजी, जयनारायणजी, संस्कृत - राजौरियाजी
हिन्दी - महेन्द्रजी झांझड़िया, श्रीमाली सर, उदयपुर

राजस्थान की कहानी - एस.एस. बैंसला की जुबानी
इतिहास- दीपकजी करोल, प्रदीप सर
साइंस - राजेन्द्रजी सोढ़ा सर, (गंगानगर)
अंग्रेजी - नन्दवानाजी, रेखाजी चावला
भूगोल - राजेन्द्र राठौड़ सर उदयपुर, अनिल दुल्लड़ सर

रतन सर-निदेशक

सभी प्रकार के कॉम्पिटीशन की तैयारी करवाई जाती हैं।

संरक्षक - O.P. सर मो. 9929728005, 8769820124, 9116987112

होली के पावन पर्व पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

सुभाष पब्लिक सीनियर सेकण्डरी स्कूल, धोइन्दा

*** विद्यालय के गौरव ***

सत्र 2012-13 दसवीं बोर्ड जिला मेरिट में तृतीय स्थान	सत्र 2013-14 दसवीं बोर्ड राज्य स्तरीय मेरिट में 12वां व जिला मेरिट में 2 स्थान	सत्र 2014-15 12वीं विज्ञान बोर्ड जिला मेरिट में 12वां स्थान	सत्र 2014-15 मा.शि. बोर्ड 10वीं कक्षा जिला मेरिट में 10वां स्थान
रवि कुमावत 92.33%	देवेन्द्र गायरी 95.67%	काजल कुमावत 90.20%	अजयपाल सिंह राणा 94.17%

सत्र 2015-16 मा.शि. बोर्ड 10वीं कक्षा जिला मेरिट में 16वां स्थान	सत्र 2015-16 मा.शि. 10वीं बोर्ड की गौरवशाली प्रतिभाएं	सत्र 2016-17 मा.शि. 10वीं बोर्ड की गौरवशाली प्रतिभाएं	सत्र 2016-17 मा.शि. 10वीं बोर्ड की गौरवशाली प्रतिभाएं
भरत कुमावत 92.83%	नाजिस डायर 92.00%	दिव्या कुमावत 96.33%	प्रिन्स दवे 92.67%

राजसमन्द जिले में श्रेष्ठतम विद्यालय की ओर अग्रसर

प्रवेश प्रारम्भ सत्र 2019-20

कला वर्ग : इतिहास, भूगोल, संस्कृत साहित्य, अंग्रेजी साहित्य राजनैतिक विज्ञान, चित्रकला, संगीत, अर्थशास्त्र

वाणिज्य वर्ग : लेखाशास्त्र, अर्थशास्त्र, व्यवसाय अध्ययन कम्प्यूटर विज्ञान

विज्ञान वर्ग : भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीवन विज्ञान, गणित, कम्प्यूटर विज्ञान

अंग्रेजी माध्यम नर्सरी से 12वीं तक [कला, वाणिज्य, विज्ञान विषय]

हिन्दी माध्यम नर्सरी से 12वीं तक (कला, वाणिज्य विज्ञान विषय)

आर. के. हॉस्पीटल के पास, गायरिया वास रोड़, हाउसिंग बोर्ड, धोइन्दा, राजसमन्द

फोन : 02952-220403 मो. 9460446756, 9414173503 Email : sps.dhoinda@gmail.com

GM फायनेन्स & प्रोपर्टी

होम लोन, मोरगेज लोन, कार लोन, पर्सनल लोन, जीवन बीमा, मकान प्लॉट, कृषि भूमि, क्रय-विक्रय हेतु सम्पर्क करें।

दिलीप जैन

मो. 9214384205 9602997715

जे.के. मोड, होलीथड़ा, कांकरोली, जिला-राजसमंद

जयवर्द्धन

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 96729 94705

Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

To